वार्षिक प्रतिवेदन
ANNUAL REPORT
2009-2010

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

NEW DELHI

वार्षिक प्रतिवेदन

ANNUAL REPORT

2009 - 2010

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

नई दिल्ली

NEW DELHI

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक प्रतिवेदन

2009-2010

विषय-सूची

संकल्पना			1
संगठन			3
सारांश			5
कलानिधि			**9-20**
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	9
कार्यक्रम ख	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार प्रलेखन साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार	14
कार्यक्रम ग	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	18
कार्यक्रम घ	:	मीडिया केन्द्र	18
कार्यक्रम ङ	:	संरक्षण प्रयोगशाला	19
कलाकोश			**21-24**
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	21
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	22
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	23
कार्यक्रम घ	:	क्षेत्र-अध्ययन	24
जनपद-सम्पदा			**25-32**
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	25
कार्यक्रम ख	:	बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ	25
कार्यक्रम ग	:	जीवन-शैली अध्ययन	27

कलादर्शन **33-43**

कार्यक्रम क : संग्रह 33

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियाँ एवं प्रदर्शनी 33

कार्यक्रम ग : सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चा/अन्य कार्यक्रम/गतिविधियाँ 37

सूत्रधार **44-45**

कार्मिक 44

आपूर्ति एवं सेवाएँ 44

भवन परियोजना समिति 44

अनुबन्ध

1. : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य 46
2. : केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य 48
3. : 1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 तक इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियाँ 49
4. : 1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 तक इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजित व्याख्यान 50
5. : 1 अप्रैल, 2009 से मार्च, 2010 के दौरान केन्द्र में केन्द्र के प्रकाशन 51
6. : केन्द्र के अधिकारियों की सूची (31.03.2010 को) 52

CONTENTS

Concept		55
Formation of the Trust		56
Organisation		57
Brief Summary and Highlights		59

KALĀNIDHI

Programme A	:	Reference Library	62
Programme B	:	National Information System and Data Bank; Cultural Informatics Lab	67
Programme C	:	Cultural Archives	69
Programme D	:	Media Centre	70
Programme E	:	Conservation Lab	71

KALĀKOŚA

Programme A	:	Kalātattvakośa	73
Programme B	:	Kalāmulaśāstra	73
Programme C	:	Kalāsamālocana	74
Programme D	:	Area Studies	75

JANAPADA SAMPADĀ

Programme A	:	Ethnographic Collection	76
Programme B	:	Multimedia Presentations and Events	76
Programme C	:	Lifestyle Studies	78
		North East Study Programme	78

KALĀDARŚANA

Programme A :	Collections	84
Programme B :	Seminars and Exhibitions	84
Programme C :	Lectures/discussions and other programmes/Events	87

REGIONAL CENTRES 91

SŪTRADHĀRA

Personnel	93
Supplies and Services	93
Building Projects	93

Annexures

I :	Board of Trustees (as on 31.3.2010)	94
II :	Members of the Executive Committee (as on 31.3.2010)	96
III :	Exhibitions held during 2009-10	97
IV :	List of Lectures held during 2009-10	98
V :	Publications brought out during 2009-10	99
VI :	List of officers of IGNCA during 2009-10 (as on 31.3.2010)	100

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक विवरण- 2009-2010

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो। कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा। अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कलाओं के विषय में अधिगम की विलक्षणता इस तथ्य में परिलक्षित है, कि यह लोक और शास्त्रीय, मौखिक और श्रुत, लिखित और उच्चरित और प्राचीन और आधुनिक को एक परिपूर्णता में देखता है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद और

अविच्छिन्नता पर बल दिया जाता है जो अन्ततः मनुष्य को मनुष्य के साथ और मनुष्य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने प्रकाशनों, अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय विचारगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं द्वारा अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य की अभिव्यक्ति करता है। स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसार कार्यक्रमों की परिधि में आते हैं। बहु विषयक भौगोलिक अध्ययनों द्वारा यह अनुसंधान को पूर्ण बनाता है ताकि विकास प्रक्रिया में सांस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरक किया जा सके।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं और अन्य विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध, विभिन्न क्षेत्रों के मध्य परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण, एवं नागरिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का, एवं इसी प्रकार भारत की लिखित एवं मौखिक धाराओं के मध्य पारस्परिक आदान-प्रदान का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नवम्बर, 2004 के आदेश संख्या ओ०एम०एफ०स०16/26/2004-यू०एस०(अकादमी)के अनुसार 21 सदस्य सेवानिवृत्त हुए तथा 9 नए सदस्य मनोनीत किए गए । आदेश संख्या 16-26/2004 अकादमी (दिनाङ्क 2 फरवरी, 2005) के अनुसार 2 न्यासी और मनोनीत किए गए । आदेश संख्या 16-26/2004यू०एस०अकादमी (दिनाङ्क 5 मई, 2005) के अनुसार 2 न्यासी और मनोनीत किए गए । 31 मार्च, 2007 को कार्यकारी न्यासियों के नामों की सूची अनुबन्ध 1 पर दी गई है।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे

सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश : यह संभाग आधारभूत अनुसन्धान का कार्य करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला, (ग) भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद-सम्पदा : यह संभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस संभाग ने (घ) एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक (ङ) संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन : यह संभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है। इसके प्रस्तावित भवनों में इन कार्यकलापों के लिए तीन रंगशालाएँ तथा बड़ी-बड़ी दीर्घाएँ होंगी।

साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार 1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना ''स्ट्रेंगथेनिंग'' नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ । इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

सूत्रधार : यह संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाता है।

1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 की अवधि की वार्षिक रिपोर्ट

सारांश

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष आदरणीय श्री चिन्मय आर०घारेखान तथा गणमान्य न्यान्सियों के निरन्तर मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन से अभिप्रेत इ०गा०रा०क०केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० ज्योतिन्द्र जैन के पूर्ण सर्वेक्षण में कलाओं के प्रमुख स्त्रोत के रूप में कार्य करते हुए ; कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में एकीकृत अध्ययनों एवं शोध कार्यक्रमों जैसे कला एवं सम्बन्धित विषयों पर मूलग्रन्थ तैयार करने का कार्य केन्द्र निरन्तर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता रहा । इसके अतिरिक्त केन्द्र, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, व्याख्यानों, कार्यशालाओं, विभिन्न प्रदर्शनियों एवं बहुमाध्यमिक परियोजनाओं के माध्यम से सृजनात्मक तथा आलोचनात्मक वार्ता के लिए निरन्तर एक मंच उपलब्ध कराता रहा ।

एक मुख्य संसाधन केन्द्र के रूप में इ०गा०रा०क०केन्द्र के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, जिनमें प्रदर्शनियाँ, संगोष्ठियाँ तथा उत्सव सम्मिलित हैं, के माध्यम से लोकप्रिय तथा विद्वत्तापूर्ण ज्ञान के प्रचार-प्रसार में योगदान देता रहा। केन्द्र ने देश-विदेश के कई शैक्षणिक संस्थानों तथा विद्वानों के साथ महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए तथा अनेकों संस्थानों के साथ सहयोगात्मक कार्य कलापों को बढ़ावा दिया ।

संग्रह

आलोच्य वर्ष में इ०गा०रा०क०केन्द्र ने नए अर्जन से पाण्डुलिपियों स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ्स तथा कला वस्तुओं के माइक्रोफिल्मस संग्रह को समृद्ध बनाया तथा विविध विषयों पर नए प्रकाशन निकालता रहा। पुस्तकालय ने अपने संग्रह में 5434 पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियों के 5452 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ जोड़ी ।

कार्यक्रम

वर्ष 2009-10 में संस्थान में दीर्घावधि कार्यक्रम जैसे अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में चलने वाले शोध कार्य, शब्द कोशों का संकलन तथा कला एवं सम्बन्धित विषयों , जिनमें वास्तुकला एवं संस्कृति सम्मिलित है, के मूलग्रन्थों का आलोचनात्मक सम्पादन, अनुवाद एवं प्रकाशन उन्नति पर रहे। कलामूलशास्त्र के अन्तर्गत डॉ० मार्क डिज़्कोवस्की द्वारा अनुवादित *मंथन-भैरव-तंत्र* तथा प्रो० प्रेमलता शर्मा द्वारा सम्पादित *एसेज़ ऑन म्यूज़िक कलेक्टिड वर्क्स ऑफ ए०के०कुमारस्वामी* कलासमालोचना के अन्तर्गत प्रसिद्ध कला इतिहासकारों के आलोचनात्मक लेखों के पुन:मुद्रण इस श्रृंखला में प्रकाशित किए गए । क्षेत्र सम्पदा परियोजना के अन्तर्गत अन्य मुख्य ग्रन्थ हैं- डॉ०पी०जी०माथूर द्वारा *सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द गुरुवयूर*, डॉ०जॉन मेकिम मालविले द्वारा रचित एवं वैद्यनाथ सरस्वती द्वारा सम्पादित पिलग्रीम्स : सेक्रेड लैंडस्केप एंड सेल्फ ऑर्गेनिज़ेशन कॉम्प्लेक्सिटी ; तथा जीवन शैली अध्ययनों के अन्तर्गत रोमा चटर्जी द्वारा रचित *राइटिंग आइटेंटीज़, फॉकलोर एंड फ्रफोर्मेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया* ।

आलोच्य वर्ष में कला/ज्ञान से सम्बन्धित कार्यों के प्रचार प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत इ०गा०रा०क०केन्द्र ने एक दर्जन से अधिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इनमें प्रमुख हैं:-

1. द मॉनेस्टरीज़ ऑफ रिनचेन जांग्पो इन इण्डिया एंड द तिब्बत;
2. लिगेसी ऑफ अजन्ता-द क्लासिक म्यूरल्स ऑफ इण्डिया एंड अदर कंट्रीज ऑफ साउथ एशिया।
3. आर्किटेक्चर सस्टेंएब्ल ।
4. कल्चरल लैंडस्केप ऑफ नार्थ-ईस्ट इण्डिया ।
5. एक्सप्रेशन एट तिहाड़ आर्ट वर्क्स बाई इंमेट्स ऑफ तिहाड़ जेल एंड कंटेम्प्रोरी आर्टिस्ट्स।
6. इमेज़िज ऑफ इंडिया -ए फैसिनेटिंग जर्नी थ्रू टाइम ।
7. रिक्रिएटिंग चम्पा रूमाल।

इण्डियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन तथा मिश्र, पोलैण्ड, एवं फ्रांस दूतावसों के सौजन्य से सहयोगात्मक प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया ।

1. इण्टर कल्चरल डॉयलॉग बिटवीन नार्थ-ईस्ट इण्डिया एंड साउथ-ईस्ट एशिया ।

2. दि इफला इण्टरनेशनल न्यूज़ कांफ्रेंस 2010 ।

3. ऑरिएंटेशन वर्कशॉप फॉर लाइब्रेरी प्रोफेशनल्स एंड टीचर्स ।

4. वर्कशॉप ऑन मैन्यूस्क्रिप्टोलॉजी एण्ड पैलियोग्राफी ।

5. वर्कशॉप ऑन कंजर्वेशन एंड मैनेजमैंट ऑफ पर्शियन त्रिमुड्डि एंड मुगल आर्किटेक्चर एंड

6. 10 एबीआईए वर्कशॉप ।

अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए, उपर्युक्त के अतिरिक्त केन्द्र ने कला प्रभावों, चुनिन्दा विषयों/दुर्लभ पुस्तकों पर प्रदर्शनियों; संगोष्ठियों, सम्मेलन, एवं विविध विषयों पर कार्यशालाओं, उत्सव, फिल्म शो तथा विविध विषयों पर व्याख्यानों आदि का आयोजन किया । क्षेत्र सम्पदा परियोजना के अन्तर्गत *ब्रज महोत्सव* भारत में एक सबसे पुराना पारिवारिक मंच समूह *सुरभि* द्वारा प्रस्तुत नाट्य; भारत के उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण -पूर्व एशिया के राज्यों के बीच संस्कृतिक सम्बन्धों को उजागर करता है।

उत्तर-पूर्व, इ०गा०रा०क०केन्द्र अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बना रहा । आलोच्य वर्ष में उत्तर-पूर्व भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को उजागर करने एवं महत्त्वपूर्ण सफलता के साथ एक नया कदम उठाया गया । यह एक माह का कार्यक्रम संलग्न नृत्य पर समाप्त हुआ जिसमें उत्तर-पूर्व तथा इण्डोनेशिया, थाइलैंड तथा कम्बोडिया के कलाकारों ने भाग लिया।

संदर्भ पुस्तकालय ने विद्वानों एवं उपयोगकर्त्ताओं को आकर्षित करने हेतु पुस्तकालय की सुविधाओं को बढ़ाया । सामग्री उपलब्धता के अभाव में बहुत-सा अधूरा काम पड़ा हुआ है परन्तु जनता के उपयोग एवं प्रसार-प्रचार के लिए तैयार नहीं है। इस कार्य के लिए दो अध्येतावृत्ति योजना चालू की गई है ताकि इन सामग्रियों को प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, प्रकाशन इत्यादि के लिए सुज्जित किया जा सके। दो वरिष्ठ एवं 22 कनिष्ठ अध्येताओं की नियुक्ति भी की गई जो व्यक्तिगत संग्रहों पर शोध एवं प्रलेखन कार्य तथा शैलकला, रामकथा, हरिकथा एवं दुर्लभ पुस्तकों की परियोजनाओं पर कार्य कर सकें।

दो नए प्रोफेसर तथा दो एसोशिएट प्रोफेसर की नियुक्ति करके शैक्षणिक संकाय को भी मजबूत बनाने का प्रयत्न किया गया । एक प्रोफेसर को विजुअल आर्ट्स, फिल्मों, प्रलेखनों तथा मीडिया सम्बन्धित कार्य दिया गया तथा दूसरे को कलादर्शन विभाग दिया गया । एसोशिएट प्रोफेसर को विभिन्न परियोजनाएँ जैसे समुदायों की जीवनशैली अध्ययन, उत्तरपूर्व पर साँस्कृतिक अध्ययन इत्यादि दिए गए।

संक्षेप में, अनुमोदित कार्यक्रमों के अन्तर्गत कार्यों का एक विस्तृत लक्ष्य बनाया गया और यह एक संतोषजनक बात है कि लगभग प्रत्येक विभाग ने अपने लक्ष्य के अनुसार कार्य पूर्ण किया।

केन्द्र की 1,अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 के कार्यकलापों की एक विस्तृत एवं विभागानुसार रिपोर्ट निम्नलिखित है:-

कलानिधि प्रभाग

(पुस्तकालय, सूचना प्रणाली, साँस्कृतिक सायंत्रिक संचार, साँस्कृतिक अभिलेखागार तथा संरक्षण संविभाग)

कलानिधि कलाओं के प्रमुख साँस्कृतिक संसाधन केन्द्र कलानिधि के मुख्य घटक हैं-मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशेज का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक विशाल संग्रह, सांस्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत, दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा आदि का एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अन्तर्विभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्त्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सायन्त्रिक संचार एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के शोधकर्त्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में हैं। इसमें अमुद्रित एवं मुद्रित स्त्रोत वस्तुओं की संख्या लगभग तीन लाख है।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

कला निधि संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कलाओं के व्यापक क्षेत्रों में एक विशाल संग्रह है। इसमें संस्कृत पालि, फारसी और अरबी की अप्रकाशित पाण्डुनलिपियों के अनेक माइक्रोफिश, माइक्रोफिल्म एवं फोटोग्राफ्स तथा पुरातत्व, दर्शन, धार्मिक और परम्परागत अध्ययन, इतिहास और मानवशास्त्र, कला और साहित्य और लोक, ग्रामीण और समुदाय अध्ययन पर बहुविध रिप्रोग्राफस उपलब्ध है।

अर्जन

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष, पुस्तकालय ने क्रय एवं उपहार के माध्यम से 5434 पुस्तकों का अर्जन किया । जबकि 1668 पुस्तकों खरीदी गई, जम्मू कश्मीर एवं जैन साहित्य पर सामान्य वर्ग से उपहार स्वरूप पुस्तकें प्राप्त की। पुस्तकालय ने उत्तर-पूर्व संग्रह में अनेक दुलर्भ एवं अमुद्रित पुस्तकें जोड़ी।

पत्रिकाएँ

पिछले वर्ष की भांति पुस्तकालय इस वर्ष भी शैक्षणिक एवं तकनीकी पत्रिकाएँ मँगवाईं जातीं रहीं । 179 पत्रिकाएँ मँगवाई जाती है। उनके विषय हैं- मानवशास्त्र, पुरातत्त्व, कला, ग्रन्थ विज्ञान पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान, संरक्षण, अभिनय कलाएँ, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा विज्ञान, साहित्य संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, प्राच्य अध्ययन, दर्शन शास्त्र, पुत्तल कला, धर्म, सामाजिक विज्ञान, थिएटर एवं क्षेत्र अध्ययन। इस अवधि के दौरान पुस्तकालय ने विभिन्न पत्रिकाओं के 1818 अंक प्राप्त किए।

रैट्रो बदलाव परियोजना तथा जर्नल्स हेतु वर्तमान प्रारूप की जगह मार्क 21 लगवाना

इण्टरनेशनल कैटलॉगिंग रिकार्ड फार्मेट एमएआरसी-21 का प्रयोग विश्व के उच्च स्तरीय पुस्तकालयों में किया जा रहा है । इसमें लगभग 1.25 लाख कैटलॉगिंग रिकार्ड्स के सृजन एवं सम्पादकीय कार्य सम्मिलित हैं । अभी तक 67000 रिकार्ड्स का सृजन एवं सम्पादन हुआ है।

पुस्तकों की बारकोडिंग

सितम्बर, 2009 में पुस्तकों की बारकोडिंग का कार्य आरम्भ किया गया । यह एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक पद्धति है। अभी तक लगभग 45,000 पुस्तकों की बारकोडिंग हो चुकी है।

ग्रन्थ सूचियाँ

एबीआईए परियोजना

एबीआईए भारतीय पुरातत्व की टीकाकृत ग्रन्थ सूची है जिसे वर्ष 1926-73 के दौरान केन इंस्टीट्यूट, लीडन द्वारा प्रकाशित किया गया था। जब इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट एशियन स्टडीज (आईआईएएस) लीडन ने इस ग्रन्थसूची को बनाने का प्रस्ताव दिया तो वर्ष 1996 में इसका आरंभ किया गया। नए रूपांतरण को एबीआईए साउथ और साउथ ईस्ट एशियन आर्ट और पुरातत्व इन्डेक्स (आईबीआईए इन्डेक्स) कहते हैं। आईआईएएस लीडन ने इस अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना को आरंभ किया ताकि ग्रन्थ सूची इलैक्ट्रानिक ऑनलाइन डेटाबेस को संकलित किया जाए और रखा जाए जो अंककृत रिकार्ड सप्लाई करता है जिसके अन्तर्गत ये विषय आते हैं: इतिहास पूर्व और पश्च, सभ्यता, पुरालेखशास्त्र और पुरालिपि, मुद्राशास्त्र और मोहरविद्या। इस डेटाबेस से प्राप्त की गई टीकाकृत ग्रन्थसूची एबीआईए इन्डेक्स के सीडी रोम रूपांतरण के अलावा मुद्रित रूप में हर वर्ष प्रकाशित की जाती है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जनवरी 2007 से दिसम्बर 2011 तक इस परियोजना का समन्वयन देश कार्यालय है।

इस अवधि के दौरान एबीआईए परियोजना के अन्तगर्त निम्नलिखित कार्य किए गए :-

1) एबीआईए डाटा बेस में 48 रिकार्ड बनाए गए ।

2) 29 सूचीकृत रिकार्ड्स तैयार किए गए ।

7 से 11 दिसम्बर, 2009 के दौरान 10वीं एबीआईए सभा एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

व्यक्तिगत संग्रह

वरिष्ठ विद्वानों एवं कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रह एकत्रित करना, पुस्तकालय का एक विशिष्ट प्रकार्य है। पुस्तकालय में श्री सुनीति कुमार चटर्जी, श्री हजारी प्रसाद दिवेदी, श्री ठाकुर जयदेव सिंह, श्री कृष्ण कृपलानी, श्री महेश्वर नियोग, श्री नारायण मेनन, श्री देव मुरारका, श्री लांस डेन, श्री हीरा मानक एवं डॉ० कपिला वात्स्यायन से अर्जित या उपहार स्वरूप प्राप्त संग्रह मौजूद है ।

पुस्तकालय सेवाएँ

पुस्तकालय ने 49 नए सदस्यों का नामांकन किया। पुस्तकालय अपने अनेक उपभोक्ताओं को संदर्भ एवं फोटोकापी की सुविधा प्रदान करता है ।

रिप्रोग्राफी

पाण्डुलिपि पुस्तकालय

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश/डिजिटल संग्रह के रूप में एक हस्तलिपि पुस्तकालय का विकास किया है ताकि विभिन्न प्रह्लह्यङ्ढ पर अप्रकाशित भारतीय हस्तलिपियों को जो भारत में इधर-उधर विकीर्ण पड़ी है और ऐसे विदेशी संग्रहों को जिन तक अनुसन्धान करने वाले विद्वानों की पहुंच नहीं हो पाती एकत्र करने के लंबी अवधि से चले आ रहे मिशन को पूरा किया जाए। स्र इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने लगभग 3000 ऐसे ही भण्डारों की पहचान की। कुछ निम्नलिखित माइक्रोफिल्मिंग परिन्योजनाएँ चल रही है।

ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर में उपलब्ध लगभग 65,000 पाण्डुलिपियों में से 1687 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों में 14,000 पाण्डुलिपियों का फिल्मांकन किया है। उनमें से 70 प्रतिशत से अधिक ताड़पत्र पाण्डुलिपियाँ हैं।

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, अलवर

आलोच्य वर्ष में, देवनागरी लिपि की 1568 पाण्डुलिपियाँ को माइक्रोफिल्म कुंडलियों में संग्रहीत किया गया जिससे कुल योग अब 7280 पाण्डुलिपियों का हो गया है। इंस्टीट्यूट के पास संस्कृत ग्रन्थों की 8500 पाण्डुलिपियों से अधिक हैं, जिनमें वेद, पुराण, धर्मशास्त्र इत्यादि समाहित हैं।

सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी की 1,11,538 पाण्डुलिपियाँ 5538 कुण्डलियों में तैयार किए । इनमें लगभग 120,000 संस्कृत पाण्डुलिपियाँ हैं।

आशा है, राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर, जयपुर एवं श्रीजैन मूडबिदरी मठ, कर्नाटक में शीघ्र ही यह कार्य आरम्भ होगा।

माइक्रोफिल्म्स का प्रतिलिपिकरण

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ऐसे व्यक्तियों विभिन्न निजी एवं सार्वजनिक संस्थानों/संगठनों से सम्पर्क साधा जिनके पास बहुमूल्य पाण्डुलिपियाँ हैं तथा उनके सूक्ष्मचित्रण हेतु समझौता किया । बदले में, इ०गा०रा०क०केन्द्र ने उन्हें माइक्रोफिल्म्स रोल्स की पॉजिटिव कॉपी उपलब्ध की। अब तक, इ०गा०रा०क०केन्द्र ने विभिन्न संस्थानों/पुस्तकालयों से 20792 मास्टर माइक्रोफिल्म नेगेटिव रोल्स प्राप्त किए। इस संग्रह के अतिरिक्त, इ०गा०रा०क०केन्द्र की सलाह से विभिन्न पुस्तकालयों/संस्थानों को10416 पॉजिटिव रोल्स का प्रतिलिपिकरण एवं हस्तान्तरण किया गया। संग्रहीत पाण्डुलिपि पर लगभग 30425 प्रतिलिपि रोल्स तैयार किए गए एवं उनका बैकअप लेकर स्टोर किया गया । अब तक कुल 14946 रोल्स का प्रतिलिपिकरण कर लिया गया है । गत वर्ष के दौरान, इनमें से कुल 5452 रोल्स का प्रतिलिपिकरण एवं विभिन्न संस्थानों/पुस्तकालयों को भेज दिया गया है । विवरण नीचे दिया गया है :-

1.	सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी	= 3410*
2.	गवर्नमेंट ओरिएंटल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, चैन्नई	= 1114
3.	श्रीराम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुनिथुरा	= 200
4.	अद्वैत आश्रम मायावती, पीथोरागढ़	= 72
5.	आनन्द आश्रम संस्था, पुणे	= 102
6.	एशियाटिक सोसाइटी, मुम्बई	= 2
7.	बोम्बे यूनीवर्सिटी, मुम्बई	= 2
8.	गुरु संगोलसोम कालिदामान सिंह कॉलेज, इम्फाल	= 14
9.	कामरूप अनुसन्धान समिति, गुवाहाटी	= 16
10.	नाटुम संगीत अकादमी, इम्फाल	= 10
11.	पं० खेलचन्द्र सिंह संग्रह, इम्फाल	= 20
12.	रामकृष्ण मिशन, चेन्नई	= 2

13.	श्री चैतन्य अनुसन्धान संस्थान, कोलकाता	=	220
14.	वृंदावन अनुसन्धान संस्थान, वृंदावन	=	20
15.	युमन धन्नञ्जय सिंह संग्रह, इम्फाल	=	8
16.	उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार	=	240
	कुल	**=**	**5452**

*सभी संख्याएँ दो से विभाजित हैं।

स्लाइड संग्रह

इन स्लाइड्स के सरल-संदर्भों का प्रबन्ध है। इस वर्ष,1131 कैटलॉग कार्ड्स की लिबसिस डेटाबेस में प्रविष्टियाँ की गई है । इस एकक ने 200 पुस्तकों के दृष्टान्त दुर्लभ पुस्तकों के लिए ग्रन्थसूची एवं भाष्य/टीका तैयार की । कुछ विद्वान अपने अकादमी कार्य हेतु स्लाइड्स संग्रहों का प्रयोग कर रहे हैं।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और डाटा बैंक तथा साँस्कृतिक सायंत्रिक सञ्चार

राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और डाटा बैंक डिजिटल अभिलेख : आईजीएनसीए डिजिटल अभिलेख तैयार करने की प्रक्रिया में है : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और भारतीय कला का डाटा बैंक । इस विषय पर निम्न उपाय किए गए :-

(1) दुर्लभ पुस्तकों का डिजीटीकरण

2000 से अधिक पुस्तकों (600,000 पृष्ठों) का डिजिटीकरण किया गया। अन्य 800 पुस्तकों (200,000 पृष्ठों)को जल्दी ही पूरा किया जाना है ।

जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकाता के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत सुधीन्द्रनाथ दत्ता, बुद्ध देव बोस, शक्ति चट्टोपाध्याय, राजेश्वरी दत्ता और ज्योतिर्मोयी देवी सहित प्रमुख बंगाली कवियों की कृतियों को डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जा रहा है। यह कार्य समयानुसार जारी है।

(2) पीडीएफ संरक्षण परियोजना

डिजिटल अभिलेख तैयार करने के लिए, जेपीईजी फार्मेट में सामग्री को पीडीएफ फार्मेट में बदला जा रहा है। अभी तक 2465 दुर्लभ पुस्तकों (700,000पृष्ठों)को परिवर्तित किया गया है।

(3) पाण्डुलिपि के रिकार्ड का एमएआरसी-21 फार्मेट में पश्यगामी वर्गीकरण

लगभग 2.5 लाख पाण्डुलिपियों का पुस्तकालय को पूर्ण रूप से स्वचालित बनाने के लिए नेटवर्क वातावरण में ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (ओपीएसी) के माध्यम से पाण्डुलिपियों के ग्रन्थ सूची ब्यौरो की पहुंच देने के लिए लिबसिस प्रीमिया डाटा बेस में एमएआरसी-21 फार्मेट में पाण्डुलिपि के ग्रन्थ-सूची रिकार्ड के पश्यगामी वर्गीकरण की परियोजना शुरू की गई । जून, 2009 से 51176 रिकार्ड बनाए गए और 21220 रिकार्ड की संवीक्षा की गई ।

सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार

सांस्कृतिक *सायंत्रिक संचार(सीआईएल)* की स्थापना कला एवं सूचना प्रौद्योगिकी के बीच संवाद स्थपित करना है ताकि नवीन प्रौद्योगिकी के विकास और प्रयोग से साँस्कृतिक प्रलेखन समृद्ध हो सके।

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डाटाबैंक :

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डाटा बैंक : एक प्रायोगिक परियोजना (भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली की सहयोग से) यह परियोजना, संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों पर उपलब्ध सूचना एवं ज्ञान का डिजिटिकरण, प्रलेखन तथा प्रसार करने तथा अभिगम्य बनाने के विस्तृत कार्यों के कार्यक्रम का अंश है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रयोग से भारतीय सांस्कृतिक संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ावा देना है। इस परियोजना में भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित सूचनाओं का डिजिटाइज़ेशन सम्मिलित है। परियोजना का फल शोधकर्त्ताओं, छात्रों, कला इतिहासकारों, पुरातत्त्व शास्त्रीयों इत्यादि द्वारा इण्टरनेट की सहायता से ऑनलाइन देखा जा सकता है । परियोजना के प्रदायों में संरक्षित तथा असंरक्षित पुरातत्त्व एवं धरोहर स्थानों के

डिजिटल फोटोग्राफ, देशी जीवन शैली, श्रव्य एवं दृश्य पुस्तकें, चुने हुए पुरातत्त्व स्मारकों के 2-डी वाकथ्रु इत्यादि सम्मिलित हैं।

इस परियोजना के अन्तर्गत अभी तक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण पुस्तकालय से प्राप्त 12,274 दुर्लभ पुस्तकों (लगभग 50 लाख पृष्ठ) डिजिटाइजेशन तथा 1 लाख डिजिटल छवियाँ एवं 200 घंटों के ऑडियो-विडियो सामग्रियाँ, छह स्थलों के 2डी वाकथ्रु बनाए जा चुके हैं।

हर्वसाधारन्ण के प्रयोग हेन्तु आंशिक डेटा आईजीएनसीए की वेबसाइट (www.ignca.gov.in) पर प्रकाशित किया गया है। परियोजना अंतिम चरण में है।

आईजीएनसीए ने 20000 माइक्रोफिल्म रोल्स, 1.5 लाख माइक्रोफिश और डिजिटल प्रारूपों में उपलब्ध संस्कृत, फारसी और अरबी की 2.5 लाख पांडुलिपियों को अधिग्रहीत किया है।

वर्ष 2009-10 में 1137 माइक्रोफिल्म रोल्स (5,83,260 फोलियो निहित)और 5338 माइक्रोफिश (2,53,551 फोलियो)का डिजिटीकरण इस वर्ष पूरा किया गया। ऐतिहासिक एवं पुरातनिक अध्ययन निदेशालय (डीएचएएस)और श्रीमत शंकर केन्द्र, असम में 2008-09 में पाण्डुलिपि डिजिटीकरण का आरम्भ किया गया । वर्ष के दौरान लगभग 1,40,000 पृष्ठ पाण्डुलिपियों का एसएसए में और 50000 पृष्ठों का (डीएचएएस) में डिजिटीकरण किया गया। कुमारस्वामी संग्र से दृश्य, दस्तावेज और चयनित पुस्तकों का डिजिटीकरण जून, 2009 में पूरा किया गया। सुरभि (आंध्र प्रदेश से एक पारम्परिक रंगमंच विधा)के दुर्लभ चित्रों में संग्रहण को आईजीएनसीए में प्रदर्शनी के लिए डिजिटाइज़ किया गया। भारतीय हिन्दुस्तानी क्लासिकल संगीत के गायन और वाद्य शैलियों का अनुसन्धान और अभिलेखन परियोजना के अन्तर्गत कई कलाकारों की दृश्य सामग्री का डिजिटीकरण पूरा किया गया। आईजीएनसीए के तीन सैम्पल मूर्त्तियों का 3डी डिजिटाईज़ेशन किया गया और सार्वजनिक पहुँच के लिए आईजीएनसीए की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। टू पिलग्रिम्स -एलिज़ाबेथ सास और एलिजाबेथ ब्रूनर के जीवन और कार्य पर पारस्परिक मल्टीमीडिया सीडीरोम का कार्य अंतिम चरण में है, और यह मई, 2010 में जारी किए जाने की आशा है ।

देवनारायण सीडी रोम परियोजना का कार्य भी पूर्णता के समीप है। परियोजना में नए आयाम जैसे तीर्थ यात्राएँ आदि को परियोजना समन्वायक श्री श्रीलाल जोशी की जुलाई, 2010 में दौरान उनके साथ चर्चा के बाद जोड़ा जाएगा।

बृहदीश्वर परियोजना के अकादमिक समन्वयक डॉ० आर. नागास्वामी ने मार्च-अप्रैल, 2010 में इ०गा०रा०क०केन्द्र के साथ बृहदीश्वर मंदिर का दौरा किया । वे वाहनों के और अप्रैल 2010 में मंदिर के वार्षिक उत्सव में किए गए विधि-विधान के प्रलेखन का समन्वय कर रहे हैं। वे वाहनों के भित्ति चित्र और विधि-विधान पर कार्य को पूरा करने के लिए जून-जुलाई,2010 में सीआईएल के साथ समय देने को मौखिक रूप से सहमत हो गए हैं। मंदिर के चण्डिकेश्वर स्थल के प्रोटोटाइप के रूप में 3 जी कार्य पर विस्तार से चर्चा की गई है और यह मई 2010 में आरम्भ हो जाएगा।

विश्वरूप परियोजना पर कार्यरत प्रोफेसर टी०एस० मैक्सवैल से दीर्घाविधि से लंबित इस परियोजना को पूरा करने का अनुरोध किया गया है।

अग्निचायन पर परियोजना भी विकास पर है। यह परियोजनाएँ मुख्य रूप से शैक्षणिक निर्देशन के अभाव चलते लंबित हैं।

आई०जी०एन०सी०ए० वेबसाइट, भारतीय कला एवं संस्कृति पर सूचना का प्रमुख स्रोत है तथा वर्ष 2009-2010 के दौरान प्रतिमाह 2.1 लाख लोगों ने इस साइट को देखा। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के लिए (www.asi.nic.in)वेबसाइट को डिजाइन तथा विकसित किया जिसकी उपयोगकर्ताओं एवं विद्वानों द्वारा व्यापक तौर पर प्रशंसा की गयी है। ए०एस०आई० तथा नेशनल म्युज़ियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के लिए भी वेबसाइट तैयार किए गए।

राष्ट्रीय स्मारक एवं पुरातात्विक निधियों के राष्ट्रीय मिशन की पुरातन वस्तु पंजीकरण फार्म के डिजिटीकरण परियोजना के अन्तर्गत वर्ष में 57988 प्रपत्र जिसमें 196949 पृष्ठ शामिल हैं इनको डिजिटाईज़्ड किया गया । कुल मिलाकर 76503 प्रपत्र में 255,294 फ्रेम्स और छायाचित्र डिजिटल फॉर्मेट में उपलबब्ध हैं। वर्ष में सीसीआरटी के 50000 स्लाइड्स में से 19689 स्लाइड्स को डिजीटाइज़ किया गया है।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

समीक्षाधीन वर्ष में, भारत सरकार की ओर से आईजीएनसीए ने कला इतिहासकार, दर्शनशास्त्री, लेखक ए०के० कुमारस्वामी, के अमेरिका में रहने वाले परिवार से दुर्लभ पुरातात्विक संग्रह प्राप्त किए। इस संग्रह में रविन्द्रनाथ टैगोर, अबनीद्रनाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर की कलाकृतियों सहित, पत्र, मार्जिन में डॉ० कुमारस्वामी के टीका और टिप्पण के साथ पुस्तकें और अन्य कला कृतियों सहित नल दमयन्ती शृंखला की पेंटिग्स और मूर्त्तिकला की लघुकृतियाँ शामिल है। इसमें डॉ० कुमारस्वामी के कार्य और 1904 से उनमें संग्रह सहित 1934 में उनके टैगोर द्वारा दिए गए उपहार प्रदर्शित हैं। आईजीएनसीए ने पहले ही प्रमुख कला इतिहासकारों के महत्त्वपूर्ण लेखों, विशेषकर ए०के०कुमारस्वामी संग्रह के पुनः मुद्रण की शृंखला के अन्तर्गत कई प्रकाशनों को प्रकाशित किया है।

यह संग्रह वर्तमान में आईजीएनसीए के साँस्कृतिक अभिलेखागार में प्रापण, संरक्षण, वर्गीकरण, डिजिटीकरण तथा उचित प्रलेखन में है।

इसके अलावा, साँस्कृतिक अभिलेखागार ने एलिज़ाबेथ ब्रूनर संग्रह से सम्बन्धित 550 पेंटिंग्स की अवाप्ति दर्ज की।

कार्यक्रम घ : मीडिया केन्द्र

आरंभ से ही इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र समुदायों की जीवन शैलियों और संस्कारों को प्रलेखित और महान विभूतियों से साक्षात्कार करने में संलग्न रहा है। श्रव्य-दृश्य यूनिट के पास अच्छी तरह से सूचीबद्ध पुस्तकालय है जो भीतरी और बाहरी उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध है। इस वर्ष जो मुख्य प्रलेखन कार्य किया गया उसमें से कुछ का संबंध अमूर्त साँस्कृतिक धारोहर से है :-

1. असम और बिहार में मनसा पूजा
2. भिलवाड़ा में फ़ड पेंटिंग
3. उदयपुर में गवरी
4. रामनगर और टोंक में चार बायत की काव्य परम्परा
5. बुंदेलखंड रामलीला
6. बुंदेलखंड के बिरहा लोक गायन
7. ब्रज महोत्सव
8. सुरभि रंगमंच उत्सव
9. मीडिया एकक ने दूरदर्शन पर कलातरंग पत्रिका कार्यक्रम के प्रसारण हेतु संस्कृति और कला पर 26 घण्टे का कार्यक्रम भी तैयार किया।

दृश्य कला और मीडिया अध्ययन

अक्तूबर, 2009 में एक नवनियुक्त प्रोफेसर को दृश्य कला और मीडिया पर एक परियोजना सौंपी गई थी। इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य (1) महान कलाकारों और ऐतिहासिक महत्त्व की कृतियों का प्रलेखन कार्य (2) संग्रहालयी प्रदर्शनी का आयोजन करना, अभिलेख हेतु दृश्य कला से सम्बन्धित स्त्रोतों की पहचान करना और (3)दृश्य कला-पेंटिंग, मूर्त्तिकला ग्राफिक्स और (4) फोटोग्राफी आदि के क्षेत्र में कार्यशाला, संगोष्ठी और व्याख्यान का आयोजन करता है।

कलाभवन, शन्तिनिकेतन में स्मारक अंशों के भित्ति चित्रों पर प्रोफेसर के०जी० सुबह्मण्यन के कार्य का अभिलेखन करने की प्रथम प्रमुख परियोजना ली गई थी। पाइप लाइन में अन्य कार्य है (1) फिल्म निर्माता अडूर गोपालाकृष्णन (2)रूद्र वीणा के उस्ताद अली खान (3) लेखक एम०टी० वासुदेवन नायर और (4)केरल में यहूदी पर्यावास का प्रलेखन।

कार्यक्रम ङ : संरक्षण प्रयोगशाला

1. **प्रदर्शनी सामग्री का संरक्षण:** संरक्षण प्रयोगशाला द्वारा जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा सुरभि प्रदर्शनी में प्रयुक्त वस्तुओं पर संरक्षण कार्य किया गया, जैसे पृष्ठ भूमि स्क्रीन, वस्तुएँ, हथियार, संगीत वाद्य यंत्र और सार्वजनिक सम्बोधन प्रणाली से सम्बन्धित इलैक्ट्रानिक वस्तुएँ - माइक्रोफोन, रिकार्ड प्लेयर आदि । सुरभि रंगमंच समूह द्वारा प्रयुक्त ये वस्तुएँ काफी पुरानी है और इनका बार-बार परिवहन करने से ये क्षीण हो गई है, रंग फीके पड़ गए, पेंट खराब हो गया, नाखूनों और आंसुओं के चिह्न और कीटों का प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, धूल, दाग और क्षय भी पाया गया ।

2. **दुर्लभ पुस्तकों हेतु आपातकालीन संरक्षण उपचार :** संरक्षण प्रयोगशाला ने आईएफएलए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2010 डिजिटल संरक्षण और समाचार तथा विचारों की पहुँच पर आईजीएनसीए में प्रदर्शित पुस्तकों के परिरक्षण में संदर्भ पुस्तकालय को सहयोग दिया । इस

स्थिति का आकलन करने के बाद, प्रदर्शिनी में सुविधा के लिए, इन दुर्लभ पुस्तकों के लिए आपातकालीन उपचार दिया गया ।

3. नृतत्त्वशास्त्रीय सामग्री का संरक्षण

जनपद-सम्पदा विभाग के संग्रह में विभिन्न जनजातियों की नागा वस्तुएँ, फोटोग्राफ्स, ट्रांपेरेन्सीज़, कपड़े, पगड़िया, बाजूबन्द तथा पारम्परिक शस्त्रास्त्र सम्मिलित हैं। इन वस्तुओं का प्रणालीगत एवं वैज्ञानिक रीति से संरक्षण किया गया । संरक्षण के उपरान्त सभी वस्तुएँ मेलिनेक्स में करीने से रखी गईं। हर वस्तु के लिए अम्ल रहित माउंट बोर्ड तथा पर्याप्त पैडिंग वाला एक भण्डारण डिब्बा बनाया गया ।

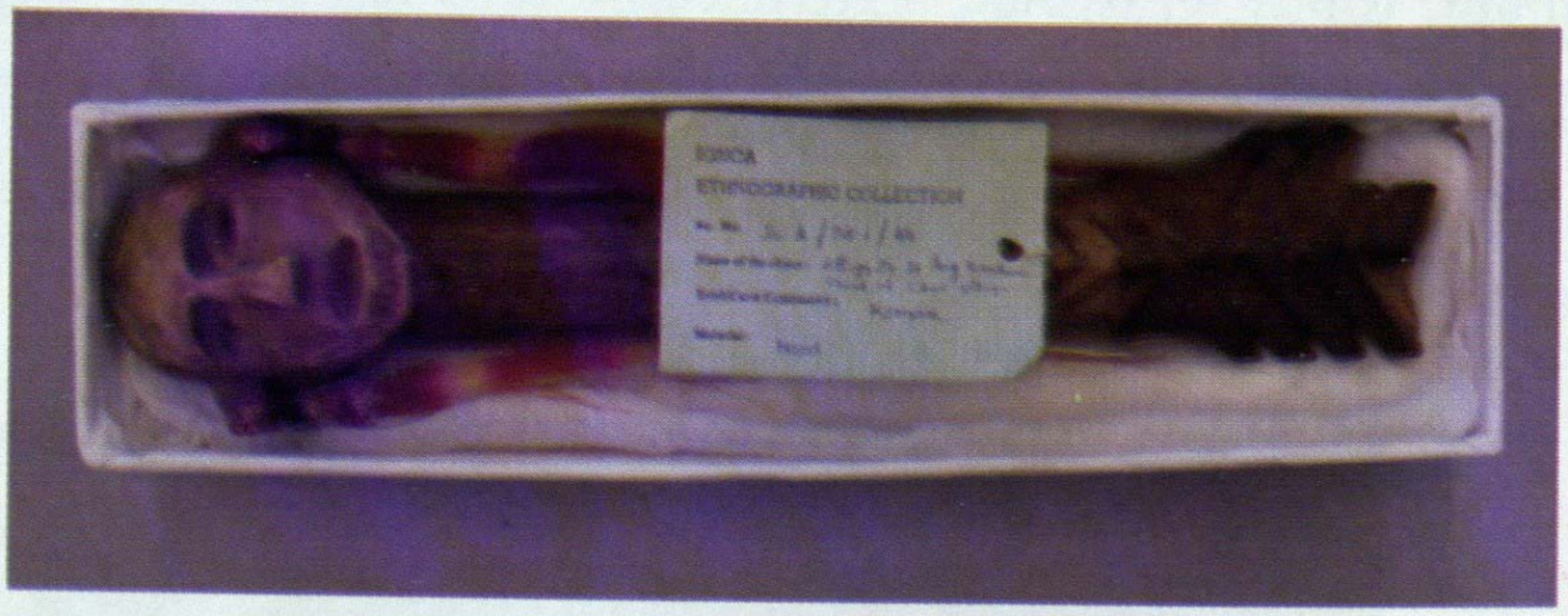

4. तवांग मठ में प्रिवेंटिव संरक्षण कार्यशाला

मई, 2009 में तवांग मठ अरूणाचल प्रदेश में एक संरक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। मठों में काम करने वाले लोगों ने इसमें प्रतिभागिता की । इस कार्यशाला का उद्देश्य पाण्डुलिपि के अभिरक्षकों को पाण्डुलिपि सम्हालने और उचित भण्डार की शिक्षा देना एवं जागरूकता फैलाना था ।

5. ब्रूनर्स संग्रह अवस्था-आकलन

एसिजाबेथ ब्रूनर एवं एलिजाबेथ सास ब्रूनर की कलाकृतियों का प्राथमिक अवस्था आकलन किया गया।

कलाकोश प्रभाग

(अनुसन्धान एवं प्रकाशन संविभाग)

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भों में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् लगभग 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की जाती है। इस शृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके छः खण्ड निकल चुके हैं। इस वर्ष कलातत्त्वकोश खण्ड सात के चार लेख प्राप्त हुए, जिनका सम्पादकीय कार्य जल्द ही पूरा हो जाएगा।

कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्ड

कलातत्त्वकोश संदर्भ कार्डों की तैयारी: आईजीएनसीए के वाराणसी कार्यालय पर में कार्य जारी है, जिसमें संदर्भ कार्डों को पूर्वसूचित प्रासंगिक पाठों से तैयार किया जा रहा है। ये संदर्भ कलातत्त्वकोश शब्दावली से संबंधित हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शब्द पर लेख लिखने के लिए किया जा रहा है । इस वर्ष, 2821 नये कार्ड तैयार किए गए। सम्प्रति पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र के पास संदर्भो उध्दरण एवं उनके अनुवाद सहित 57398 कार्ड्स मौजूद हैं।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम , तंत्र, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। गत वर्ष तक इस शृंखला में 22 मूल ग्रन्थ (45 खण्डों में)प्रकाशित किए जा चुके हैं। इस शृंखला के अतिरिक्त केन्द्र ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है, जो कलामूलशास्त्र शृंखला के लिए सन्दर्भ ग्रंथों का काम करेंगे।

इस वर्ष 11 खण्डों (4 से 14)का अति महत्त्वपूर्ण एवं विस्तीर्ण शाक्त तंत्र ग्रन्थ- मंथान-भैरव-तंत्र (कुब्जिकागम)का प्रकाशन किया गया। तीन खण्डों में इसकी विस्तृत भूमिका गत वर्ष प्रकाशित हुई थी। डॉ० मार्क डिक्ज़कोवस्की द्वारा 14 खण्डों, 5707 पृष्ठों का सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य पूर्ण हुआ।

निम्नलिखित ग्रंथ सम्पादनाधीन हैं:-

1. **रागलक्षण :** सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० आर० सत्यनारायण (संगीत)
2. जैमिनीय-ब्राह्मण : प्रो० एच०जी०रानाडे द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवादित ग्रन्थ(वैदिक श्रौत सूत्र)।
3. रसगंगाधर : प्रो० रमा रंजन मुखर्जी द्वारा सम्पादित (दो खण्डों में)(अंलकार शास्त्र) ।
4. नारद कृत संगीतमकरन्द- डॉ० एम विजयलक्ष्मी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित ।

वास्तुकला एवं नगर योजना

5. समरांगणसूत्रधार - (चार खण्डों में) डॉ० पी०पी०आप्टे एवं श्री सी० वी० काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित (संगीत) ।

वैदिक /श्रौत कर्मकाण्ड(कृष्ण यजुर्वेद)

6. काण्वशतपथब्राह्मण : (भाग छः)

7. बौधायन श्रौत-सूत्र : (चार खण्डों में) बौधायन श्रौत सूत्र भवस्वामी के भाष्य सहित । प्रो० टी०एन० धर्माधिकारी द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं प्रस्तावना सहित ।

कार्यक्रम (ग): कलासमालोचना शृंखला

(समालोचनात्मक विद्वता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग के कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित किए जाते हैं, जिनमें कलाओं तथा सौन्दर्यशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक सामग्री समाविष्ट हो । इस शृंखला के एक भाग के अन्तर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थाई स्रोतों का अन्वेषण किया है और नानाविध परम्पराओं के मध्यम सम्पर्क-सेतुओं का निर्माण किया है । इसके दूसरे भाग के अन्तर्गत, कुछ चुनिंदा विद्वान् लेखकों की कृतियों के पुनरीक्षित एवं पुनर्व्यवस्थित संस्करण एवं अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं । इस कार्यक्रम का सर्वाधिक उल्लेखनीय उपक्रम है; डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी की कृतियों का, विषयपरक पुनर्व्यवस्थापन तथा लेखक के प्रामाणिक संशोधनों सहित,एवं विख्यात विद्वानों द्वारा सम्पादित रूप में पुनर्मुद्रण।

इस वर्ष विषय *एसेज़ ऑन म्यूज़िक* डॉ० आनन्द के० कुमार स्वामी के संगृहीत कार्यों की शृंखला के 17 खण्डों का प्रकाशन संगीत शास्त्र की प्रसिद्ध विदुषी स्वर्गीय प्रेमलता शर्मा द्वारा प्रकाशित किया गया। निम्नलिखित ग्रंथ प्रकाशाधीन हैं :-

- उज्वलनीलमणि ऑफ श्रीरूपगोस्वामी- सम्पादक श्रीमती उर्मिला शर्मा।
- इलस्ट्रेटिड बालिसत्र भागवत पुराण-सम्पादक प्रो० के०डी०गोस्वामी ।
- संगीत साहित्य दर्शन : ठाकुर जयदेव सिंह के निबन्धों का संग्रह (दो खण्डों में) सम्पादक डॉ० उर्मिला शर्मा ।

- इण्डो पोर्चुगीज़ इम्ब्रायडरीज : आर्ट कॉन्टेक्स्ट हिस्ट्री-सम्पादक टी०पी०परेरा एवं लोतिका वरदाराजन ।

- रस-देश : कमेण्ट्री ऑन केलिमाल -श्री राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी द्वारा स्वामी श्री हरीदास के संग्रहीत श्लोक ।

कार्यक्रम (घ) : क्षेत्रीय अध्ययन

विदेशों में भारतीय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से क्षेत्रीय अध्ययन एकक द्वारा केन्द्र में निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित का गईं:-

- *आर्ट एण्ड आर्कियालॉजी ऑफ साउथ ईस्ट एशिया* पुस्तक का सम्पादकीय कार्य पूर्ण हो चुका है। आशा है वर्ष 2010 तक यह पुस्तक प्रकाशित हो जाएगी।

- प्रो० एदि सत्यवती एवं प्रो० आई वयन अर्दिक द्वारा सम्पादित *रिसेंट स्डड़िज इन इण्डोनेशिया आर्कियालॉजी* मोनोग्राफ के संशोधन का कार्य पूर्ण हो गया है । यह शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी ।

- इन्दिरा गाँधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति प्राप्त इण्डोनेशियन विद्वान् प्रो० बाम्बोंग सुनार्तो का अध्येतावृत्ति मोनोग्राफ *बिट्वीन संगीत एंड करवितान* उनसे प्राप्त किया गया ।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रकाशन, इस एकक ने नाखोन सवन थाईलैण्ड की नाखोन सवन राजाभट यूनिवर्सिटी के डॉ० विलार्ड वान दे बोगार्ड का व्याख्यान *रिटर्न ऑफ विष्णु : एस्टोनॉमी एप्लाईड टू इण्डियन माइथोलॉजी* का आयोजन किया । 22 जुलाई, 2009 को भारत में पूर्ण सूर्य ग्रहण के प्रभावों को रेखांकित करने के उद्देश्य से यह व्याख्यान आयोजित किया गया । यह कार्यक्रम सफल रहा।

जनपद सम्पदा प्रभाग

(जीवन-शैली एवं क्षेत्रीय संस्कृतियों पर शोध का संविभाग)

जनपद सम्पदा, आर्थिक-सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदाय की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोक विद्या तथा कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित है। मौखिक परंपराओं पर केन्द्रित इस संभाग का कार्यपटल विभिन्न सांस्कृतिक दलों तथा समुदायों के बीच अन्तस्संबंधों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। इस संभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:-क) मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह (ख) बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ (ग)जीवन शैली अध्ययन (जिसे दो भागों में बाँटा गया है। (1) लोक परम्परा (2) क्षेत्र सम्पदा

कार्यक्रम (क) : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह के अन्तर्गत अनुसन्धान विश्लेषण और प्रसार हेतु मौलिक संसाधन के रूप में मौलिक, पुनर्रुत्पादन और रिप्रोग्राफी फार्मेट अपेक्षित हैं।

कार्यक्रम (ख) : बहुमाध्यामिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ

इस इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, भारतीयन समाज से सदियों से सम्बद्ध कला-सामग्री को स्रोत रूप में रेखांकित करने हेतु प्रस्तुतियों एवं आयोजनों की योजना बनाई गई है। शैल कला अनुसंधान आदि श्रव्य कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण संघटक है। मौलिक अवबोधन शक्तियों से उद्भूत कार्यक्रम है- आदिश्रव्य

आदि दृश्य

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य मानव की मौलिक अवबोधन शक्तियों से उद्भूत कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। मानव को अपनी दृश्य एवं श्रव्य रूपी आद्य शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ ।

शैलकला एवं उससे सम्बद्ध विषयों का प्रलेखन एवं अध्ययन

इसके अतिरिक्त अन्य प्रकाशन, इस एकक ने नाखोन सवना थाईलैण्ड की नाखोन सवन राजाभट यूनिवर्सिटी के डॉ. विलार्ड वान दे बोगार्ड का व्याख्यान रिटर्न ऑफ विष्णु : एस्टोनॉमी एप्लाईड टू इण्डियन माइथोलॉजी का आयोजन किया। 22 जुलाई, 2009 को भारत में पूर्ण सूर्य ग्रहण के प्रभावों को रेखांकित करने के उद्देश्य से यह व्याख्यान आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम सफल रहा।

इस वर्ष इस परियोजना के अन्तर्गत निम्नलिखित विवरण के अनुसार डाटा संकलित किया गया:-

- उड़ीसा और मध्य प्रदेश के शैल कला आकड़ों अर्थात् फोटो और उनका पाठ और सम्बन्धित क्षेत्र के भू-विवरणों सहित तैयार किए गए और सर्वर में अपलोड करने हेतु सीआईएल भेजे गए।
- उत्तराखण्ड के आंकड़े और फोटो (569) सर्वर में लोड करने हेतु तैयार है।
- आंध्र प्रदेश के 400 फोटो और राजस्थान (फेज-2)के 400 फोटो का वर्णन कम्प्यूटर में दर्ज किए गए।
- उड़ीसा के 587 फोटो, मध्यप्रदेश के 482 फोटो और उत्तराखंड के 569 फोटो की सूची तैयार है और उसका विवरण कम्प्यूटर में दर्ज किया गया है।
- तमिलनाडु (फेज-2)के 917 फोटो का वर्गीकरण करके फोटो एलबम के रूप तैयार कर दिया गया।
- तमिलनाडु (फेज-1 और फेज-2)राजस्थान (फेज-2)और आंध्र प्रदेश (फेज-2)शैल कला और ग्राम डाटा पत्रकों को कम्प्यूटर में डाल दिया गया है।
- झारखण्ड की शैलकला की डीवीडी तैयार कर दी गई है।

आदि श्रव्य

केरल की मोपला कलाएँ- इन कलाओं के निम्नलिखित पाँच रूपों में दृश्य श्रव्य वृत्त चित्र तैयार किए गए। 1) कुभ्रातिब 2)अरवाना मुट्टु 3)कोलकली 4)डुफुमुट्टु 5)ओप्पना। इसमें से प्रत्येक कला की 45 मिनट की वीडियो रिकॉर्डिंग और 25 मिनट की मोपला कला के रूपों पर एक वृत्तचित्र तैयार किया गया।

आल्हा, द फोक बैलेड :

यह दो भाईयों द्वारा सत्ता तक पहुँचने एवं उनके शासन की प्रशंसा में गायी जाने वाली एक महाकाव्यात्मक लोक गाथा है । वृत्तचित्र इस शैली की बारीरिकयों, इतिहास, मिथ,जगत् तथा भारत के कोने-कोने में फैले इसके परिपक्व प्रदर्शकों को रेखांकित करता है। 28 फोटोग्राफ्स, 1 मास्टर (मिश्र),1 मास्टर (अमिश्रित),10 घंटे के रशेज़ एवं 2-3 घंटे का सम्मिलित प्रलेखन, इस परियोजना का फल है।

गद्दी- मौखिक आख्यान

सात मौखिक आख्यान, श्रवण कथा; मौरध्वज; नीरु भगत कथा; पूमा भगत कथा; गोपी चन्द कथा; विरधा राजे की कथा; मासी भांजी को दिनाङ्क एक से छः फरवरी, 2010 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में गद्दी कलाकारों की कार्यशाला में प्रलेखित हुईं । इसका लिप्यंतरण होने के साथ ही बाद में इसका अनुवाद भी किया गया ।

कार्यक्रम (ग) : जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया जाता है। यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र है।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक -साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती हैं। वर्ष 2009-2010 में, निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रारम्भ हुईं:-

थोढा : योद्धा नृत्य : यह हिमाचल प्रदेश का एक प्राचीन नृत्य का रूप, जिसके बारे में माना जाता है कि यह महाभारत युद्ध से प्रेरित है। यह एक नृत्य है जो दो समूहों के बीच योद्धा होता है -युद्ध के प्रतीक पशद (पांडव)और शट्टहद (कौरव)होते हैं 1) इस परियोजना का समस्त फल एक मास्टर (मिश्र और अमिश्र); 2)3 घंटे के फुटेज टेप्स तथा 3) 25 छायाचित्रों में है।

बुंदेली रामकथा : रामकथा की लोक एवं जनजातीय परम्पराओं के जारी प्रलेखन के एक भाग के रूप में बुंदेली लोक रामायण का प्रलेखन किया गया।

पश्चिम बंगाल, बिहार और असम में देवी मनसा : बंगाल, बिहार और असम में मनसा देवी से सम्बन्धित रीति रिवाज, परम्पराएँ, आख्यान, संगीत और अभिनय के प्रलेखन का कार्य पूरा हुआ । श्रव्य दृश्य प्रलेखन के साथ इस परियोजना के अन्तर्गत 1) मनसा परम्परा पर एक शोधपूर्ण मोनोग्राफ 2) 107 स्लाइड्स 3) मनसा की दो स्क्रोल्स और तीन वाद्य यंत्र 4) तीनों राज्यों से परम्परागत अभिनय कर्त्ताओं की एक दस दिवसीय कार्यशाला जो कि आईजीएनसीए में आम जनता के लिए एक नाट्य प्रदर्शन के रूप में परिणत हुई।

फिल्म : लेंडस्केपिंग द डिवाइन : स्पेस एंड टाइम अमंग गद्दी

फिल्म के अन्तर्गत बताया गया कि किस प्रकार भौतिक परिदृश्य एक साँस्कृतिक पाठ में परिवर्तित होता है जिसके द्वारा समाज स्वयं बताता और विचारता है।

बसोहा : अखिल भारतीय गद्दी जनजातीय विकास समिति के सहयोग से 12 अप्रैल, 2009 को गद्दी त्यौहार मनाया गया ।

अमूर्त साँस्कृतिक धरोहर :

रम्माण : गढ़वाल हिमालय का धार्मिक त्यौहार और रीतिक नाट्य मंच जिसे यूनेस्को की अमूर्त्त साँस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधिक सूची में सूचीबद्ध किया गया । अमूर्त्त साँस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधिक सूची के 2009-10 चक्र के लिए देश में साँस्कृतिक संस्थानों/प्रशिक्षण संस्थानों के सहयोग से जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा 20 नामांकन तैयार किए गए । जो निम्न प्रकार से है:-

1)मुदियेट्टु 2) कालबेलिया 3) छाऊ 4) चार बेत 5) शैडो पपेट्स 6) जांदियाला गुरु का थाथेरस 7) कोलम 8)रथवा नी घेर 9) संकीर्तन 10)वीणा और इसका संगीत 11)सत्रिया 12) बौद्ध भजन 13) लामा नृत्य 14) संखेड़ा नु लाख काम 15) हिंगन मोलेला 16) पटिला 17) फड़ 18) नाचा 19)दशावतार 20) सल्हेश त्यौहार

उपर्युक्त 20 नामांकनों में से मुदियेट्टु, कालबेलिया और छाऊ को प्रतिनिधि सूची के चालू चक्र में जाने का निर्णय लिया गया ।

गतिविधियाँ

तीज उत्सव : जनपद सम्पदा प्रभाग अपने वार्षिक दिवस के रूप में तीज उत्सव मनाता है । इस वर्ष 24 जुलाई, 2009 को तीज उत्सव था । इस समारोह के एक भाग के रूप में राधे झूलन पधारो : ए सेलेब्रेशन ऑफ द फेमेनाइन- श्री चैतन्य प्रेम संस्थान वृदावन के श्री श्रीवत्स गोस्वामी द्वारा भाषण दिया गया था। मिर्जापुर से प्रसिद्ध कजरी कलाकार श्री राम कैलाश यादव और लखनऊ से सुश्री मालिनी अवस्थी ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए । एक तीज बाज़ार भी लगाया गया । दिनाङ्क 24 से 31 जुलाई, 2009 तक दस मिथला पेंटिंग और रामकथा पर 34 गोंड़ पेंटिंग की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था ।

26 अक्तूबर, 2009 को डॉ० रोमा चटर्जी द्वारा राइटिंग आइडेंटिटीज़, फोकलोर एण्ड परफार्मेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया पर एक चर्चा आयोजित की गई ।

ब्रज उत्सव : ब्रज की धारणा ब्रज दर्शन (प्रदर्शनी), ब्रज व्याख्यान (व्याख्यान एवं चर्चाएँ), ब्रज लीला (अभिनय)से उत्पन्न है। ब्रज, मथुरा और वृंदावन नगरी के चारों और भौगोलिक क्षेत्र है तथा आईजीएनसीए की दो दशाब्दी लंबी क्षेत्र संपदा परियोजना का एक भाग है। महोत्सव के दौरान डॉ० कपिला वात्स्यायन, प्रो० इरफान हबीब, प्रो० नलिनी ठाकुर, प्रो० जॉन एस हॉवले, डॉ० उमेश चन्द्र, डॉ० उर्मिला शर्मा, प्रो० मोनिका बोहम-टेटल बाक और श्रीवत्स गोस्वामी ने ब्रज के विभिन्न पहुलओं पर भाषण दिया । प्रदर्शनी 8 दिसम्बर, 2009 तक चली।

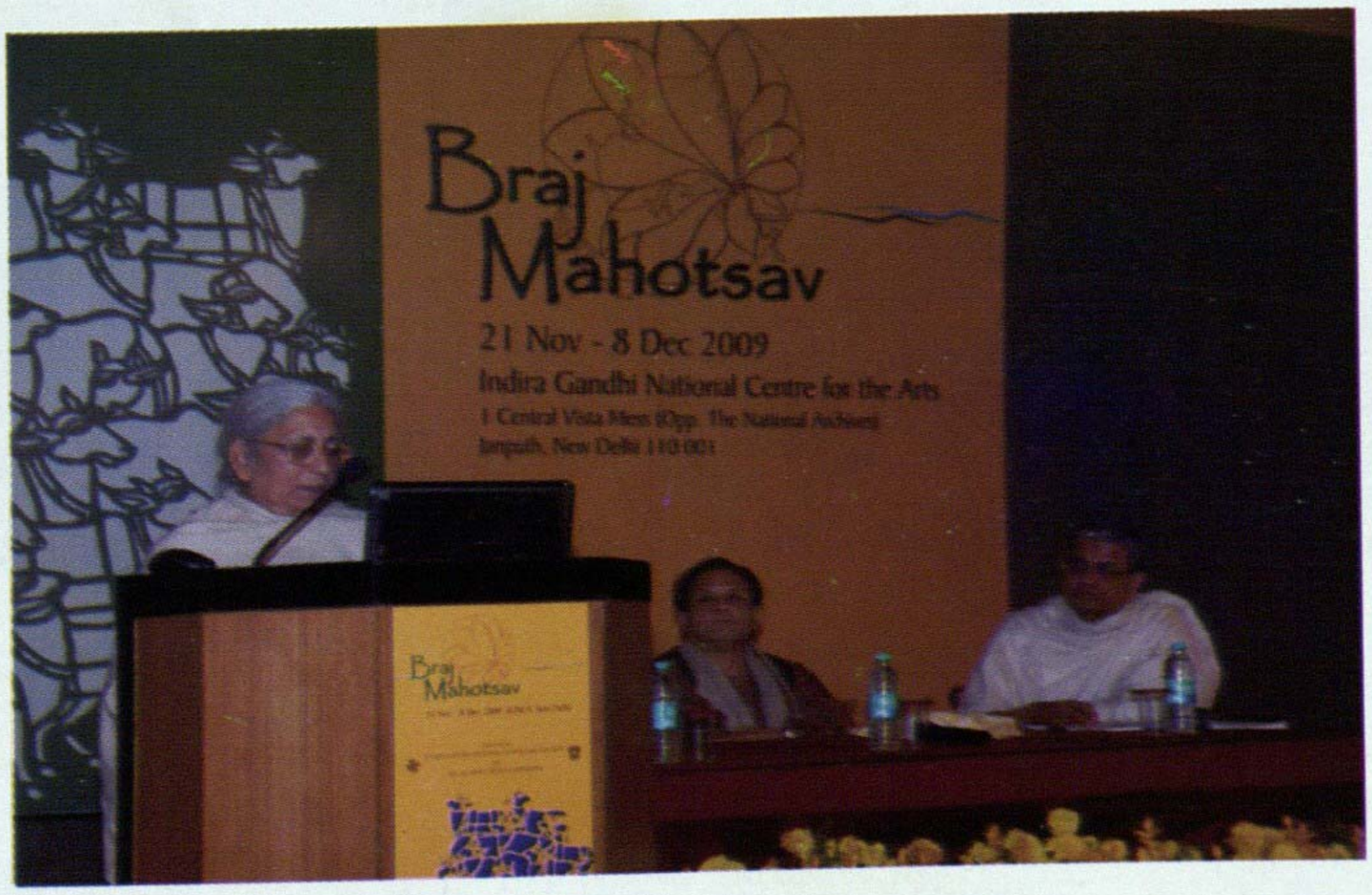

21 से 24 फरवरी, 2010 तक हेडलबर्ग, ज्यूरिक यूनिवर्सिटी के सहयोग से ट्रांसकल्चरल बॉडीज, ट्रांसबाउंडरी बायोग्राफिज : बोर्डर स्केप्स इन एशिया एण्ड यूरोप पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था । सम्मेलन में जिन प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई थी वे इस प्रकार से हैं-

क्रॉसिंग बोर्डर्स; दयाबाई; नेगोशिएटिंग क्रॉस कल्चरल नॉलेज; जेंडर क्रॉसिंग; एस्थेटिक एंड रिलीजियस ट्रांसग्रेशन; लॉ एंड माइग्रेशन; जहाजी म्यूज़िक; बायोग्राफिज एंड आइडेंटिज; ट्रांसबाउंडरी प्रोफेशनल्स-ट्रांसकल्चरल बोडीज ।

सुरभि नाट्य उत्सव : 22 फरवरी से 7 मार्च, 2010 तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से सुरभि नाट्य उत्सव का आयोजन किया गया था । इसके द्वारा आंध्रप्रदेश से परिवार आधारित थियेटर का एक अद्वितीय संस्थान इस शहर में आया । सुरभि थियेटर का आंध्रप्रदेश की शहरी एवं नगरीय जनता के बीच निरन्तर कार्य एवं लोकप्रियता का लगभग 125 वर्षों का जीवन्त इतिहास है। इस उत्सव के दौरान नाट्य मंडली द्वारा सात नाटकों का आईजीएनसीए में मंचन किया गया जो इस प्रकार थे- माया बाज़ार, श्रीकृष्ण लीलालु, बालानगम्मा; भक्त प्रह्लाद, श्री ब्रहमांगरी, जीविथा चरित्र, जय पाथाल भैरवी और चंडीप्रिया।

सुरभि प्रदर्शनी के अन्तर्गत सुरभि रंगमंच के 125 वर्ष के इतिहास से सम्बन्धित फोटो, हस्तलिपियाँ अखबारों की कटिंग, परिधान, उत्पादन सम्बन्धी टिप्पणियाँ संगीत के उपकरण, रिकार्ड प्लेयर, ध्वनि और रोशनी व्यवस्था, विस्तार पूर्वक पृष्ठ पट और उसके समान उपकरण आदि दर्शाए गए। इस उत्सव के अन्तर्गत नाटकों पर सात फुल लेंथ फिल्मों और अभिलेखागार एवं अनुसंधान के लिए पर्दे के पीछे के कार्य के 1500 फोटो प्रलेखित किए गए।

उत्तर पूर्व अध्ययन कार्यक्रम

उत्तर पूर्वी भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया के मध्य अन्तर्सांस्कृतिक वार्ता पर एक अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव : उत्तर पूर्व क्षेत्रीय साँस्कृतिक दिमापुरा और उत्तर भारत अध्ययन कार्यक्रम के सहयोग से आईजीएनसीए द्वारा उत्तर पूर्व भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के विद्यार्थियों एवं कलाकारों के बीच एक अन्तर्साँस्कृतिक वार्ता का आयोजन किया गया जिससे इन दोनों क्षेत्रों के बीच शरीरिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक और साँस्कृतिक बन्धनों का अन्वेषण किया जा सके। उत्तर पूर्व के 8 राज्यों और थाइलैंड, इण्डोनेशिया और कंबोडिया के कलाकारों और विद्यार्थियों ने अपने अभिनय का प्रदर्शन करने के साथ ही दिनाङ्क 20 फरवरी से 13 मार्च के बीच होने वाली गतिविधियों के क्रम में गोहाटी और उत्तर पूर्व के अन्य नगरों में आपसी विचारों का आदान-प्रदान किया गया। उत्तर-पूर्व भारत के 8 राज्यों से कुछ 130 नृतकों और संगीतज्ञों बालि, जावा एवं कम्बोडिया के नर्तकों और संगीतज्ञों के साथ ताल मिलाई। ये कार्यक्रम उत्तर-पूर्व के पाँच राज्यों में किए गए-गुवाहाटी (21-22 फरवरी-12 मार्च,10); शिलांग (22-24 फरबरी,10); अगरतला (24-26 फरवरी)इम्फाल (27-28 फरवरी,10)तथा दिमापुर (1-2 मार्च,10)इस मासिक कार्यक्रम का भव्य समापन समारोह दिनाङ्क 17 से 20 मार्च, 2010 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।

गुवाहाटी में एक मेल नृत्य कार्यशाला का आयोजन किया गया था जहाँ कि दक्षिण पूर्व एशिया के नृतकों के साथ आठ उत्तर पूर्व राज्यों के युवा नतकों एवं संगीतज्ञों ने आपसी विचार विमर्श किया जिसके परिणाम आईजीएनसीए, नई दिल्ली में दर्शाए गए थे। इस चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय उत्सव के अन्तर्गत इंटरकल्चरल डॉयलॉग बिटवीन नार्थ-ईस्ट इण्डिया एण्ड साउथ ईस्ट एशिया पर एक परिसंवाद का आयोजन दिनाङ्क 20 मार्च, 2010 तक किया गया था । इस समारोह के तीन मुख्य घटक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद प्रदर्शनी और साँस्कृतिक अभिनय थे ।

प्रदर्शनी

इस उत्सव के एक भाग के रूप में दिनाङ्क 17 से 23 मार्च, 2010 को माटीघर, आईजीएनसीए, नई दिल्ली में उत्तर पूर्व भारत से साँस्कृतिक आर्टिफेक्ट्स की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का मुख्य विषय उत्तर पूर्व भारत के साँस्कृतिक परिदृश्य पर केन्द्रित था ।

अभिनय

साँस्कृतिक अभिनयों के अन्तर्गत जावा, कम्बोडिया, थाइलैंड, और बाली का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्तर पूर्व भारत और उत्तर पूर्व एशिया द्वारा नृत्यों का आयोजन किया गया । यह 8 राज्यों और तीन दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के 150 कलाकारों द्वारा कविताओं और लोकसाहित्य पर आधारित संयुक्त उत्पादन पर केन्द्रित था । इण्टर कल्चरल डॉयलॉग बिटवीन नार्थ-ईस्ट इंडिया एंड साउथ ईस्ट इंडिया पर अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव के एक भाग के रूप में नार्थ-ईस्ट इण्डिया का फूड एण्ड क्राफ्ट बाज़ार और नार्थ-ईस्ट इण्डिया द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी और एक वृत्तचित्र का भी आयोजन किया गया था ।

कलादर्शन प्रभाग

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्धा करावाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभाग ने अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की एक अतुलनीय शैली प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है। इस विभाग के अन्तर्गत डायस्पोरा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बच्चों के लिए बाल जगत के कार्यक्रम आते हैं।

कार्यक्रम क : संग्रह

अन्तरानुशासनिक विषयपरक कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप सर्वाधिक बहुमूल्य सामग्री का सृजन हुआ। केन्द्र ने गत अवधि में बड़ी संख्या में प्रदर्शनी, संगोष्ठी और व्याख्यान/विचार-विमर्श आयोजित किए। इन प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों के अनुसन्धान हेतु, व्यापक अकादमिक कार्य किया गया जिससे विभिन्न प्रदर्शनियों में प्रदर्शित वस्तुओं का कलादर्शन अभिलेखागार में बड़ा संग्रह होने के अलावा बड़ी मात्रा में स्त्रोत सामग्री का सृजन हुआ । यह समृद्ध संग्रह कलादर्शन का मुख्य अंश है । यह संग्रह बढ़ाता जाएगा और यह भविष्य के कार्यक्रमों के लिए स्त्रोत सामग्री भी उपलब्ध करवाएगा। देश में कई संस्थान इस संग्रह से सामग्री ऋण पर मांग रहे है।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठी और प्रदर्शनी

संगोष्ठी और कार्यशालाएँ

पर्शियिन तैमूर वंश और मुगल वास्तुकला का संरक्षण और प्रबन्धन

यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज सेन्टर भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई) यूनेस्को और नई दिल्ली कार्यालय के सहयोग से एक संयुक्त कार्यशाला आयोजित की गई थी जिसमें स्थलों की सांझा पृष्ठ भूमि और परम्परा, विशेषतः संरक्षण मुद्दे और समाधान तथा संरक्षण उपायों के साथ-साथ मध्य और दक्षिण एशिया में अवस्थित कई विश्व साँस्कृतिक धरोहरों, जो बढ़ती हुई संरक्षण चुनौतियों का सामना कर रही हैं, के भविष्य की प्रशिक्षण जरूरतों पर ध्यान दिया गया है।

दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय पवित्र कला उत्सव

आईजीएनसीए ने एटीटीआईसी के सहयोग से पाँच दिवसीय उत्सव आयोजित किया जिसमें भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय कलाकारों की भागीदारी से कई व्याख्यान, कार्यशालाओं और कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया । पवित्र वस्त्र, पवित्र भू-दृश्य एवं जेण्डर पवित्र गुफाओं और दर्शनीय स्थल, पवित्र संगीत और संस्कारों का आयोजन किया गया था। इस पवित्र विधि में विभिन्न आयोजनों- कार्यशाला, वृत्तचित्र और कलाप्रदर्शन के माध्यम से भी प्रदर्शन किया गया था।

प्रदर्शनी

मिस्र कला के रंग

इस प्रदर्शनी में मई 20 से 22, 2009 तक मिस्र के नौ समकालीन कलाकारों के कार्यों का प्रदर्शन किया गया । यह प्रदर्शनी,संग्रहालयाध्यक्ष अहमद अब्देल करीम द्वारा लगाई गई जिनके कार्यों की शृंखला भी प्रदर्शनी का हिस्सा थी, इस प्रदर्शनी का आयोजन आईजीएनसीए, भारतीय साँस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् (आईसीसीआर)और अरब रिपब्लिक ऑफ इजिप्ट के दूतावास के सहयोग से आयोजित की गई थी। कलाकारों ने अपने देश की कला में समकालीन कार्यों को दर्शने हेतु कैलीग्राफी और एब्स्ट्रैक्ट दोनों में समकालीन चिह्नों (ज्यामितिय रूपों)का प्रयोग किया था ।

तिहाड़ की अभिव्यक्ति - तिहाड़ जेल के कैदियों और समकालीन कलाकारों द्वारा कलाकृतियाँ

प्रदर्शनी में भागीदार कलाकारों के प्रथम अनुभव के माध्यम से कैद और मुख्यधारा के समाज की झलक मिली । यह प्रदर्शनी 12 अगस्त से 2सितम्बर, 2009 तक रामचन्द्र नाथ फाउंडेशन, ओजस आर्ट और आईजीएनसीएं द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई, प्रदर्शनी में अब तक जेल की अनजान प्रतिभाओं को प्रदर्शित किया गया । इसमें उन समकालीन कलाकारों के कार्यों को भी प्रदर्शित किया गया जिन्होंने कैदियों के साथ काफी समय बिताया था ।

भारत और तिब्बत में रिंचेन जांग्पो के मठ

प्रसिद्ध कला इतिहासकार और फिल्मनिर्माता श्री बिनॉय के बहल द्वारा बौद्ध मठों की मूल श्रृंखला का प्रदर्शन अत्यन्त सुस्पष्ट था जिसमें भारत और तिब्बत में रिंचेन जांग्पो के मठों ने मठों को उनके

सही परिप्रेक्ष्य में संदर्भित किया और बौद्ध कला तथा इसके मूल का पता लगाने का प्रयास किया । प्रदर्शनी 24 सितम्बर से 20अक्तूबर, 2009 तक आयोजित की गई थी ।

यंग पोलिश प्रिंट्स- कल्पना के रूप

केन्द्र ने विभिन्न शैलियों और तकनीकों से 20 युवा पोलिश कलाकारों द्वारा बनाई गई 30 कलाकृतियों को प्रस्तुत किया गया जिसमें पोलिश समकालीन प्रिंट सृजन के व्यापक स्तर को प्रस्तुत किया गया । आईजीएनसीए ने दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय कला उत्सव और पोलैंड दूतावास के सहयोग से 3 से 14 अक्तूबर, 2009 तक इस प्रदर्शनी को प्रस्तुत किया ।

रामकथा पर मिथिला और गोंड कलाकृतियाँ

24 से 31 जुलाई, 2009 तक आईजीएनसीए अभिलेखागार द्वारा रामकथा पर मिथिला और गोंड कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई ।

अजंता की विरासत - भारत और दक्षिण एशिया के उत्कृष्ट भित्तिचित्र

प्रदर्शनी में प्रसिद्ध छायाचित्रकार और फिल्म निर्माता श्री बिनॉय के बहल द्वारा खींचे गए छायाचित्रों को प्रदर्शित किया गया, जिसमें अंजता की कलात्मक संवेदनाओं और परम्पराओं को दर्शाया गया और दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों की पेंटिंग परम्परा को प्रभावित किया ।

भारत की छवि - ए फेसिनेटिंग जर्नी थ्रू टाइम- आईजीएनसीए संदर्भ पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तक संग्रह पर आधारित प्रदर्शनी 25 फरवरी से 2 मार्च, 2010 तक आयोजित की गई थी।

आर्किटेक्चर सस्टेनेबल

आईजीएनसीए ने भारत में फ्रांसीसी दूतावास के सहयोग से 8 से 31 जनवरी, 2010 तक आर्किटेक्चर सस्टेनेबल का आयोजन किया, जिसमें पेरिस शहर की नगर-योजना और वास्तुकला को प्रदर्शित किया गया।

रॉयल पश्मीना

जम्मू व कश्मीर राज्य हथकरघा विकास निगम के सहयोग से आईजीएनसीए द्वारा 21 दिसम्बर, 2009 से 3 जनवरी, 2010 तक पशमीना शॉलों की प्रदर्शनी लगाई गई । इन शॉलों में उपलब्ध अभिलेखों से पुनः सृजित पुराने नमूनों को दर्शाया गया । एक वृत्तचित्र दिखाया गया जिसमें उच्च कुशलता वाली कला की प्रक्रिया को बताया गया।

10. यूनेस्कोइटैलिया

आईजीएनसीए ने भारत में इटैलियन कल्चरल सेन्टर के सहयोग से इटली में श्रेष्ठ समकालीन फोटोग्राफरों द्वारा 43 विश्व विरासत स्थलों के फोटोग्राफों की प्रदर्शनी लगाई । यह प्रदर्शनी 27 जनवरी से 15 फरवरी, 2010 तक आयोजित की गई ।

11. पूर्वोत्तर भारत का साँस्कृतिक भू-दृश्य

इसमें क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण साँस्कृतिक पहलुओं को दर्शाया । आईजीएनसीए के संग्रह से एथनोग्राफिक वस्तुओं और फोटो की व्यापक रेंज प्रदर्शित की गई जिसमें भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के पर्यावास भौतिक संस्कृति, कला और हस्तकला का प्रदर्शन किया गया ।

12. रिक्रिएटेड चम्बा रूमाल

आईजीएनसीए ने दिल्ली हस्तकला परिषद, जो हिमाचल प्रदेश में चम्बा क्षेत्र की कढ़ाई कला को पुनः जीवित करने के लिए प्रयासरत है, के साथ सहयोग किया । रूमाल एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक विधि रहा है। 30 मार्च से 13 अप्रैल, 2010 तक रूमाल के प्रमुख संग्रह का प्रदर्शन किया गया । एक अंतर्क्रियात्मक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें महिला कलाकारों ने इच्छुक दर्शकों को इस कला की मूल प्रक्रिया सिखाई।

कार्यक्रम ग : व्याख्यान/ चर्चाएँ

भारत और विदेश के कला संस्थानों से प्रसिद्ध विद्वान और प्रोफेसरों को सुरुचिपूर्ण व्याख्यानों और चर्चाओं के लिए आमन्त्रित करना आईजीएनसीए का नियमित कार्य है । इस वर्ष निम्न व्याख्यान आयोजित किए गए।

- इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट हिस्ट्री, यूनिवर्सिटी ऑफ विएना से प्रोफेसर एब्बा कोच ने मुगल गार्डन और भू दृश्य तथा प्रकृति पर अन्य दृष्टिकोण पर एक सचित्र चर्चा प्रस्तुत की । उन्होंने औपचारिक मुगल गार्डन अथवा चार बाग (चार भाग वाला दीवार युक्त गार्डन)के रूपों पर व्याख्यान दी जो सोलहवीं शती के बाद से भारत का प्रमुख गार्डन रूप बन गया ।
- आईजीएनसीए ने एसोसिएशन ऑफ फॉरेन अफेयर्स कॉरेस्पांडेंट्स (आईजीएनसीए) के सहयोग से रशियन फेडरेशन के राजदूत एच०ई०व्याचेस्टाव ट्रब्रीकोव के साथ चर्चा सत्र का आयोजन किया ।
- आई ए एफ ए सी के सहयोग से विदेश राज्य मंत्री डॉ० शशि थरूर के साथ एक अंतक्रियात्मक सत्र आयोजित किया गया ।
- टेम्पल्स, टेम्पलेट्स टैक्स्ट्स मेकिंग मान्यूमेंट्स इन इंडिया एक सचित्र चर्चा का आयोजन किया जिसमें भारत में मंदिर वास्तुकला के मोहक पहलुओं के सम्बन्ध में यूनाइटेड किंगडम के प्रोफेसर एडम हार्डी द्वारा प्रस्तुति दी गई ।
- संग्रहालय पर अन्तर्राष्ट्रीय रूझान : डॉ० विनोद डेनियल, भारतीय मूल के प्रसिद्ध आस्ट्रेलियाई संरक्षणकर्ता द्वारा सरंक्षण और धरोहर संरक्षण के सम्बन्ध में सचित्र वार्ता प्रस्तुत की गई । उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए भूतकाल से सम्बन्धों के संरक्षण के प्रति पारम्परिक ज्ञान की भागीदारी के लिए संग्रहालयों को अधिक अन्त:सम्बन्धी और व्यवहार्य बनाने पर प्रकाश डाला।

अन्य कार्यक्रम/गतिविधियाँ

फिल्म स्क्रीनिंग

- स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर के सहयोग से आईजीएनसीए में वॉल्यूम जी नामक फिल्म की विशेष स्क्रीनिंग की गई । वास्तुकला, संस्कृति और शहरी नियोजन पर यह फिल्म एक घंटे की थी जो विश्व के सबसे महत्त्वपूर्ण वास्तुकारों में से एक चार्ल्स कॉरिया के काम और

विचारों पर बनी थी। इसमें उनके बचपन, वास्तुकाल प्रशिक्षण उनके प्रारम्भिक वर्षों और पाँच दशकों में उनके व्यापक और जटिल वास्तुकला कार्य के पीछे निर्देशन के साथ-साथ विकासशील विश्व में शहरीकरण के मुद्दों को सुलझाने में उनकी भूमिका को दर्शाती है, फिल्म दिखाने के बाद चार्ल्स कॉरिया के साथ एक पैनल चर्चा की गई ।

- पोएट्री ऑफ हिल्स (कवरिंग द मिनिएचर्स ऑफ काश्मीर एंड कांगड़ा) व्याख्यान-सह-फिल्म स्क्रीनिंग श्री बिनॉय के० बहल द्वारा प्रस्तुत की गई; जिसमें कला सम्बन्धी प्रभावों और घाटी के विजुअल आर्ट के श्रेष्ठ कार्यों के सुन्दर मिश्रण के सचित्र दर्शाया गया ।
- वैली ऑफ स्तूपास : आईजीएनसीए में श्री बिनॉय के०बहल द्वारा फिल्म स्क्रीनिंग के साथ व्याख्यान दिया गया जिसमें कृष्णा नदी घाटी, वर्तमान में आंध्र प्रदेश में बौद्ध कला और वास्तुकला की समृद्ध धरोहर को दर्शाया गया।

उत्सव/प्रदर्शन

1. **फैस्टिवल बॉन्जू इण्डिया** - आर्किटैक्चर सस्टेनेऐब्ल: फ्रैंच एम्बेसी के सहयोग से प्रदर्शनी और मल्टी-मीडिया प्रस्तुति दी गई। ओलीवर पुआव्र द आर्वो, निदेशक, कल्चरल काउंसिलर, फ्रैंच एम्बेसी, दिल्ली और श्री राज रेवल, प्रसिद्ध भारतीय वास्तुकार की उपस्थिति में श्री जयपाल रेड्डी, माननीय शहरी विकास मंत्री ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । *आर्किटैक्चर सस्टेनएबल* में वास्तुकारों ने इल-डी-फ्रांस क्षेत्र (पेरिस क्षेत्र)में चल रही चिरस्थाई भवन निर्माण परियोजनाओं को के माध्यम से अपने वास्तुकला ज्ञान को दर्शाया । शहरों के भविष्य के लिए तीस नवीन और विचारोद्रेकक दृष्टिकोण से बनाई गई परियोजनाओं को प्रस्तुत करने के लिए विशेष फिल्म साक्षात्कार और कई मॉडलों का प्रयोग किया गया था ।
2. **वीमेन ऑन रिकार्ड :** यह 19 वीं के आख़ीर और 20 वीं शती के शुरु में ग्रामोफोन रिकार्ड के युग की गायिकाओं के प्रति श्रद्धांजलि थी । साउंड रिकार्डिंग के प्रादुर्भाव ने भारत में संगीत में आधुनिकता और प्रसार के नए युग की शुरुआत की । 20 वीं शती के शुरु में 78 आरपीएम ग्रामोफोन युग में गायिकाओं की आवाज़ों की समीक्षा करने के लिए आईजीएनसीए ने सेंटर फॉर मीडिया एण्ड अल्टरनेटिव कम्यूनिकेशन (सीएमएसी)के साथ सहयोग किया । वीमेन ऑन रिकार्ड-20वीं शती के शुरु में भारत में महिलाओं के संगीत का सम्मान शीर्ष के अन्तर्गत

मल्टीमीडिया प्रस्तुति, संगोष्ठी और प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें महिला कलाकारों के इतिहास ने साहित्य, इतिहास और कला प्रदर्शन के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण दिया ।

3. **हिन्दुस्तानी क्लासिकल संगीत** के विभिन्न घरानों का सम्मान- इस चार दिवसीय मोहक उत्सव ने गायन की विभिन्न शैलियों में हिन्दुस्तानी क्लासिकल संगीत के समृद्ध रूपों को प्रस्तुत किया। इस दुर्लभ अवसर पर नौ घरानों के प्रसिद्ध गायकों ने एक उत्सव में गायन का प्रदर्शन किया । सुश्री मीता पंडित जो स्वयं प्रसिद्ध क्लासिकल गायक हैं, ने इसे क्यूरेट अध्यक्षता किया, इस कंसर्ट ने संगीत प्रेमियों को हिन्दुस्तानी संगीत की समृद्ध गायन कला से जुड़ने का दुर्लभ अवसर दिया।

4. **वीणा नवरात्रि और विश्व वीणा यज्ञ :** वीणा नवरात्रि और विश्व वीणा यज्ञ मानव सौहार्द के लिए तारों की लयबद्धता कार्यक्रम वीणा फाउंडेशन, नई दिल्ली ने सहयोग से भारतीय विद्या भवन में आयोजित किया गया था । उत्सव में प्रसिद्ध संगीतज्ञों और उभरते हुए कलाकारों द्वारा गायन शामिल है, इसमें वीणा वादन और प्रस्तुति के उपकरण, इतिहास और परम्परा पर अनुसंधान की गई फिल्म की स्क्रीनिंग की गई ।

5. **वाचा :** वडोदा से मल्टीमीडिया डिजाइनर लोकेश खेतन और निकिता देसाई (फोटोग्राफर अभिकल्पित भारत में आदिवासी कला और संस्कृति के प्रथम अंतसम्बन्धी संग्रहालय प्रदर्शन के लिए पर वाचा शीर्षक से इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजन किया गया । यह कार्यक्रम जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की मेगा परियोजना के एक अंश के रूप में अभिकल्पित की गई थी। जिसका शीर्षक नेशनल कंसेर्टियम ऑफ ट्राइब्ल आर्ट्स एण्ड कल्चर (एनसीटीएसी) था इसमें भारत में 14 जनजातीय संग्रहालयों को डिजिटल रूप से जोड़ने का वचन दिया गया और इसे भाषा अनुसन्धान और प्रकाशन केन्द्र, बडोदरा में निष्पादित किया जा रहा है।

6. **एनईआईएफटी एनुअल डिजाइन सेरेमनी, 2009** गुवाहाटी में नार्थ-ईस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नोलॉजी का पासिंग आऊट सेरेमनी फैशन शो एनईआईएफटी वार्षिक डिजाइन सेरेमनी आईजीएनसीए में आयोजित किया गया । पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने आईजीएनसीए के सहयोग से इस बड़े आयोजन को आयोजित किया । इस आयोजन का उद्देश्य उत्तर-पूर्व क्षेत्र से युवा डिजाइनरों को राष्ट्रीय फैशन उद्योग में पैर जमाने का अवसर देना था, युवा विद्यार्थियों ने जैविक और पर्यावरणानुकूल प्रक्रियाओं और फैब्रिक की समझ के साथ समकालीन सृजन के लिए कई प्रकार के स्वदेशी वस्त्रों का प्रयोग किया ।

7. **एन इवनिंग ऑफ म्यूज़िक :** इंडियन वीमेन्स प्रेस कार्प्स (आईडब्ल्यूपीसी) और भारतीय साँस्कृतिक सम्बन्ध परिषद ने आईजीएनसीए के सहयोग से परिसर में जसपिंदर नरूला व वडाली बन्धुओं द्वारा इवनिंग ऑफ म्यूज़िक की प्रस्तुति दी । इस अवसर पर श्रीमती अंबिका सोनी, सूचना एवं प्रसारण मंत्री मुख्य अतिथि थीं और डॉ० करण सिंह, अध्यक्ष, आईसीसीआर माननीय अतिथि थे।

8. **नेचर बाजार :** आईजीएनसीए ने दस्तकार के सहयोग से वार्षिक हस्तकला और पर्यावरणीय मेला नेचर बाजार - भारत का सबसे बड़ा हस्तशिल्प मेला आयोजित किया । सम्पूर्ण भारत से भागीदारों ने 200 दुकानें लगाई, जिसमें बड़ी संख्या में विभिन्न सामग्रियों और तकनीकों में हस्त शिल्प उत्पादों को दर्शाया और बेचा गया । इसमें लोक कलाकारों ने संगीत और नृत्य का प्रदर्शन भी किया ।

9. **जैज़ उत्सव :** द कोर का आयोजन 13 दिसम्बर, 2009 को केन्द्र के खुले मैदान में सुश्री अस्त्री घोष द्वारा किया गया ।

10. **बसंत बाजार :** आईजीएनसीए ने दस्तकार के सहयोग से लॉन में बसन्त बाजार का आयोजन किया । 100 हस्तशिल्प समूहों के दस्तकार परिवार ने भारत के 19 राज्यों से हस्तशिल्प और वस्त्रों का प्रदर्शन किया । इस आयोजन में सांझी, रंगोली और पेपर कट्स, पुतुल डॉल और कठपुतली सृजन, कविता और नगयुक्त आभूषण, रंगमंच, पतंग बनाने से लेकर अन्य कई हस्तकला तकनीकों को सीखने के लिए बच्चों और व्यस्कों के लिए पारस्परिक चर्चा कार्यशाला का भी आयोजन किया।

वार्षिक उत्सव

11. **साँस्कृतिक कार्यक्रम :** आईजीएनसीए के 24 वें स्थापना दिवस पर स्पिरिट्स ऑफ इण्डिया आईजीएनसीए ने दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के 92 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 19 नवम्बर, 2009 को अपना 24 वां स्थापना दिवस मनाया । इस अवसर की पूर्व संध्या पर सदस्य सचिव आईजीएनसीए द्वारा आईजीएनसीए के विभिन्न कार्यकलापों के बारे में प्रैस को जानकारी दी गई । इस दोहरे अवसर पर आईजीएनसीए ने पद्मश्री श्रीमती माधवी मुद्गल और शिष्यों, गंधर्व महाविद्यालय, पद्मश्री श्रीमती गीता चंद्रन एवं नाट्य वृक्ष डांस कम्पनी तथा कथक केन्द्र की रिपोर्टरी कम्पनी द्वारा कथक क्लासिकल नृत्य प्रस्तुति का भी आयोजन किया ।

क्षेत्रीय केन्द्र

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

इस क्षेत्र का प्रमुख कार्य कलाकोश परियोजना के अन्तर्गत चल रहे विभिन्न परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना है। इस वर्ष 2821टाइप किए हुए कार्ट (127 कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड-07पर, 366 कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड-8 पर,144 कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड-9 पर तथा 2124 कार्ड अन्य पर)विभिन्न पाठों से चुन कर तैयार किए गए तथा दिल्ली कार्यालय को प्रेषित कर दिए गए हैं। इस समय कार्यालय में 57,398 कार्ड्स मौजूद हैं। कलातत्त्वकोश खण्ड-7 के अनुच्छेदों के मुद्रणशोधन का कार्य विद्वानों को दे दिया गया है। ग्लासरी ऑफ की आर्टटर्मस के पाण्डुलिपि के प्रथम मुद्रण की सभी प्रविष्टियाँ के त्रुटि निवारण का कार्य पूर्ण हो चुका है। वाक्यपदीय संगोष्ठी खण्ड के प्रथम खण्ड के प्रेस कॉपी का कार्य भी लगभग पूर्ण हो चुका है । एक परियोजना संगोष्ठी कार्य हेतु नाट्यशास्त्र के पाण्डुलिपियों के मिलान का कार्य किया जा रहा है।

संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ

1. 25 जून, 2009 से 10 जुलाई, 2009 तक एक दो सप्ताह की कार्यशाला निवारी एवं सारदा लिपि पाठ्य आलोचना एवं पाठ्य सम्पादन पर इ०गा०रा०क०केन्द्र, पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, दिल्ली ने मिल कर आयोजित की।
2. फरवरी, 2010 में पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक गीतों (लोकाख्यान बिरह उत्सव)पर आधारित एक तीन दिवसीय उत्सव का आयोजन इ०गा०रा०क०केन्द्र एवं क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा आयोजित किया गया। इसमें मिर्जापुर, इलाहाबाद एवं वाराणसी तथा निकट के क्षेत्रों के जाने माने पारम्परिक बिरह गायकों ने भाग लिया।

3. 15 मार्च से 25 मार्च, 2010 तक, पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा, बनारस आर्ट गैलरी वाराणसी में पर्सपेक्टिव ऑफ प्रवेसिव थिय्योरी ऑफ इण्डियन ऐस्थेटिक्स पर एक विशेष व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में कुल सात व्याख्यान विद्वानों द्वारा दिए गए।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

गुवाहाटी स्थित उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना चार वर्ष पूर्व इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उस क्षेत्र से सम्बन्धित परियोजनाओं को पूर्ण करने के लिए की गई थी। यह एक अवैतनिक संन्वायक की देखरेख में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के एन्थ्रोपोलोज़ी विभाग के सहयोग से कार्य करता है।

17 से 19 दिसम्बर, 2009 तक क्षेत्रीय केन्द्र ने गुवाहाटी में ट्रेडिशनल नॉलेज ऑफ दी इण्डिजियनस कम्युनिटीज ऑफ नार्थ ईस्ट इण्डिया रिलेटिंग टू डिफरेन्ट टाइप्स ऑफ अलकली (क्षार) : ए सब्सिट्यूट फॉर साल्ट पर एक कार्यशाला का आयोजन किया । इस कार्यशाला में पाँच उत्तर-पूर्व राज्यों से लोगों ने भाग लिया । इस अवसर पर क्षारों पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया ।

17 फरवरी से 12 मार्च, 2009 तक पाँच उत्तर-पूर्व राज्यों में इण्टर कल्चरल डॉयलॉग बिटवीन नार्थ-ईस्ट इंडिया एवं साउथ ईस्ट एशिया पर एक उत्सव में एक संगोष्ठी, प्रदर्शनी तथा चार दिन तक चलने वाले नृत्य आयोजनों के साथ किया गया । इसमें भारत, इण्डोनेशिया कम्बोडिया तथा मैयनमार के कलाकारों ने भाग लिया ।

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर

कन्नड़ इंसक्रिप्शन्स ऑफ़ फस्ट मिलिनियम एडी पर शोध परियोजना, इस परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशन कार्यक्रम 1739 शिलालेख के मुद्रण शोधन कार्य , शिलालेखों की वर्ण-क्रमानुसार सूची तैयार करना तथा विषय सम्बन्धित 28 लेख तैयार करने का कार्य पूर्ण किया जा चुका है । उपर्युक्त शिलालेखों के लिप्यन्तरण एवं अनुवाद का कार्य था प्रकाशन हेतु कार्य प्रगति पर है।

साँस्कृतिक धरोहर का प्रलेखन

- शोध परियोजना परफार्मेंस ऑफ फॉक खण्ड वैनिशिंग ट्रैडिशन रिचुअल्स के अन्तर्गत हमी एवं जनपद रामायण पर प्रलेखन कार्य पूर्ण करने के लिए आवश्यक कार्य आरम्भ कर दिया गया है।
- कुमारव्यास भारत एवं द्रोपदी वस्त्र पहराना के गायक पर 30 मिनट दो वृत्त चित्र तैयार करने का कार्य पूर्ण हो चुका है।

सूत्रधार

(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

यह एकक जो स्थापना, लेखा, वित्त, सेवा एवं आपूर्त्ति विभागों से मिलकर बना है । यहन केवल निरन्तर प्रशासनिक, प्रबन्धकीय एवं सगंठन सहायता एवं सेवाएँ सभी अनुभागों एवं एककों को प्रदान करता रहा है । अपितु यह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी गतिविधियों में नीति योजना, प्रशासन एवं समन्वय बनाने में केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करता रहा है। साथ ही साथ संस्था के लेखा का प्रबन्ध करता है।

कार्मिक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की एक सूची अनुलग्नक -3 पर दी गई है।

सेवा एवं आपूर्त्ति विभाग

सेवा एवं आपूर्त्ति एकक आतिथ्य सत्कार, लेखन-सामग्री के वितरण, यातायात, सीजीएचएस और अन्य कार्यालय देखभाल कार्यों के लिए नियुक्त उप-प्रकोष्ठ है। इ०गा०रा०क०केन्द्र के शैक्षणिक प्रभागों को निरन्तर संगठन सम्बन्धित सहायताएँ प्रदान करता रहा है । यह आलोच्य वर्ष में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों,कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों के आयोजन में सहायता प्रदान करता रहा। यह अनुभाग कार्यालय के सभी उपकरणों के रख-रखाव एवं मरम्मत के लिए भी उत्तरदायी है।

भवन परियोजना

ट्विन आर्ट गैलरी

आलोच्य वर्ष में ट्विन आर्ट गैलरीज़ के निर्माण का कार्य अन्तिम चरण में पहुँच गया है। वातानुकूलन व्यवस्था में कुछ तकनीकी गड़बड़ी होने से बीच में कुछ देरी हुई। यह गैलरियाँ इ०गा०रा०क०केन्द्र को जून, 2010 तक हस्तान्तरित कर दी जाएंगी । साज सामग्रियाँ, जिनका ठेका टी०डी० डब्ल्यू० प्राइवेट लिमिटेड अहमदाबाद को दिया गया है, हस्तांतरण के पश्चात गैलरियाँ लगा दी जाएगी।

अतिथि गृह ब्लाक

निविदा के आधार पर 11,मान सिंह रोड पर स्थित आईजीएनसीए गेस्ट हाउस को चालू करने एवं चलाने का कार्य मेसर्स अरेस्को इस्टेट प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के पश्चात दे दिया जाएगा। इसके अतिशीघ्र चालू होने की आशा है।

अन्य निर्माण कार्य

आलोच्य वर्ष में कलानिधि, कलाकोश-सम्मिलित संसाधन ए के भीतरी भाग का कार्य पूर्ण हो गया है। जबकि विभिन्न तकनीकी उलझनों के कारणवश सी०पी० डब्ल्यू डी ने सूत्रधार भवन में निर्माण कार्य आरम्भ नहीं किया है । इसके लिए प्रयत्न किया जा रहा है कि पुराने मामले समाप्त कर दिए जाएँ और सूत्रधार भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हो सके।

अनुबन्ध-1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

न्यासी मण्डल

1. **श्री चिन्मय आर० घारे खान** — **अध्यक्ष, इ०गा०रा०क०केन्द्र**
   सी-362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली-110 024

2. **डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन**
   85, एस०एफ०एस०,डी०डी०ए० फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-110 049

3. **श्री सलमान हैदर**
   ए-3, प्रथम तल,
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली-110 011

4. **डॉ० रोदम नरसिम्हा**
   अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्स युनिट
   जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
   जाकुर पी०ओ०, बैंगलूरू 560 646

5. **प्रो० ए० रामचन्द्रन्**
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग, नई दिल्ली 110 092

6. **डॉ० कान्ती बाजपेई**
   हैड मास्टर, द दून स्कूल माल रोड,
   देहरादून 248 001

7. **श्री अनिल बैजल**
ई-524, ग्रेटर क्लास
नई दिल्ली-110 048

8. **प्रो० यू०आर अनन्तामूर्त्ति**
नं० 498, सुरागी, एच०आई०जी० हाउस
आर०एम०वी० 2-स्टेज-6 ए मेन,
बैंगलूरू 560 094

9. **डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम्**
अध्यक्ष, नृत्योदया एवं द प्रबन्ध न्यासी
भरतमुनि फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर
ओल्ड 6, फोर्थ मेन रोड
गाँधी नगर, चेन्नई-600020

10. **डॉ० किरन मजुमदार शॉ**
बायोकॉन लिमिटेड
20 वा के०एम०होसूर रोड
बैंगलुरु 561 229

11. **श्री जवाहर सरकार**
सचिव, भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001

12. **प्रो० ज्योतीन्द्र जैन**
सदस्य सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची

1. **श्री चिन्मय आर० घारे खान** — **अध्यक्ष, इ०गा०रा०क०केन्द्र**
   सी 362, डिफेन्स कालोनी,
   नई दिल्ली- 110024

2. **श्री सलमान हैदर** — **सदस्य**
   ए-3, प्रथम तल
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली-110003

4. **श्री अनिल बैजल** — **सदस्य**
   ई-524 ग्रेटर कैलाश,
   नई दिल्ली 110048

5. **प्रो० ए० रामचन्द्रन्** — **सदस्य**
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग,
   नई दिल्ली 110 092

6. **प्रो० ज्योतीन्द्र जैन** — **सदस्य सचिव**
   सदस्य सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
   जनपथ, नई दिल्ली 110001

अनुबन्ध -3

1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची

1.	कलर्स ऑफ इजिप्शियन आर्ट्स	20से 22 मई, 2009
2.	यंग पॉलिश प्रिन्टस- वेज़ ऑफ इमैजिनेशन	24 से 31 जुलाई, 2009
3.	मिथिला एंड गौंड पेन्टिग्स ऑन रामकथा	24 से 31 जुलाई, 2009
4.	एक्सप्रेशन एट तिहाड़ आर्टवर्क्स बाई इंमेट्स ऑफ तिहाड़ जेल एंड कंटेम्प्रेरी आर्टिस्ट्स ।	12अगस्त से 2 सितम्बर,2009
5.	द मॉनेस्टरीज़ ऑफ रिनचेन जांग्पो इन इण्डिया एंड तिब्बत	24 सितम्बर से 20 अक्तूबर,10
6.	लिगेसी ऑफ अजन्ता-द क्लासिक म्यूरल्स ऑफ इण्डिया एंड अदर कंट्रीज ऑफ साउथ एशिया	
7.	द रॉयल पशमीना	21 दिसम्बर से 3 जनवरी,10
8.	आर्किटेक्चर सस्टेंएब्ल	8 से 31 जनवरी, 2010
9.	यूनेस्कोइटैलिया	27 जनवरी से 15 फरवरी,10
10.	इमेज़िज ऑफ इंडिया -ए फैसिनेटिंग जर्नी थ्रू टाइम	25 फरवरी से 2 मार्च,10
11.	कल्चरल लैंडस्केप ऑफ नार्थ-ईस्ट इण्डिया	10 मार्च, 2010
12.	एन एग्ज़िबिशन रिलेटिंग टू आईजीएनसीए पब्लिकेशन्स	मार्च 2010
13.	रिक्रिएटिंग चम्पा रूमाल	मार्च 2010

अनुबन्ध-4

1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित व्याख्यानों/प्रस्तुतियों/प्रदर्शनों की सूची

1. मुगल गार्डन्स एंड अदर एप्रोचिज़ टू लैंडस्केप एंड नेचर - प्रो० एब्बा कोच ।
2. इन्टेरेक्टिव सेशन विद एच० ई०व्याचेस्तव ट्रुबनिकोव, एम्बेसेडर ऑफ एशियन फेडेरेशन ।
3. इन्टेकेक्टिव सेशन विद डॉ० शशि थरुर, मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर एक्सटर्नल अफेयर्स।
4. टेम्पल्स, टेम्प्लेट, टेक्स्ट्स : मेकिंग मान्यूमेन्ट्स इन मीडिएवल इण्डिया - प्रो० एडम हार्डी ।
5. इन्टरनेशनल ट्रेन्ड्स ऑन म्यूज़ियम - विनोद डेनियल ।
6. द स्पिरिट ऑफ इण्डिया ऑन 19 नवम्बर, 2009 ।
7. जैज़ उत्सव द कोर इवनिंग ऑफ म्यूज़िक बाई जस्पिन्दर नरुला एण्ड वडाली ब्रदर्स।

अनुबन्ध-5

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची
(1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 तक)

पुस्तकें

1) राइटिंग आइडेन्टिटीज़, फोकलोर एण्ड परफॉरमेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया - रोमा चटर्जी ।

2) पिल्ग्रिमेज : सैक्रेड लैंडस्केप एणड सेल्फ-ऑरर्गेनाइज़्ड़ काम्प्लेक्सिटी जॉएंटली एडिटिड - जॉन मेकिम मेलविल एंड बैद्यनाथ सरस्वती ।

3) एसेज़ ऑन म्यूज़िक बाई डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी, स्वर्गीय प्रो० प्रेमलता शर्मा द्वारा सम्पादित ।

4) मंथान-भैरव-तन्त्र (4 से 14 खण्ड)डा० मार्क डिचक्वोस्की ।

5) सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ गुरुवयूर टेम्पल बाई पीआरजी माथूर ।

डी वी डी फिल्म्स

1. लैंडस्केपिंग द डिवाइन : स्पेस एंड टाइम अमंग द गद्दी ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची

(2009-10)

प्रो० ज्योतीन्द्र जैन

सदस्य सचिव

कलानिधि विभाग

1.	डॉ० रमेश चन्द्र गौड़	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्री मशोदा लाल	उप-निदेशक (सूत्रधार)
3.	श्री बशारत अहमद	मीडिया
4.	डॉ० अचल पाण्डेया	एसोशिएट प्रोफेसर
5.	डॉ० गौतम चटर्जी	रिसर्च एसोशिएट एवं लेखक
6.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
7.	डॉ० दीप राज गुप्त	वरिष्ठ रिप्रोग्राफी अधिकारी
8.	डॉ० कीर्त्तिकान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	रिप्रोग्राफी अधिकारी

साँस्कृतिक सांयत्रिक सञ्चार

10.	श्री प्रतापानन्द झा	निदेशक

कलाकोश विभाग

11.	डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
12.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
13.	डॉ० विजय शङ्कर शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
14.	डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
15.	प्रो० मंसूरा हैदर	सलाहकार, क्षेत्रीय अध्ययन

जनपद-सम्पदा विभाग

16. डॉ० मौली कौशल	प्रोफेसर
17. डॉ० श्रीकला शिवशंकरन	एसोशिएट प्रोफेसर
18. डॉ० एस०साइमन जान	एसोशिएट प्रोफेसर
19. डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
20 डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान एसोशिएट

कलादर्शन विभाग

21. डॉ० अर्चना शास्त्री	प्रोफेसर
22. श्रीमती अनामिक विस्वास	कार्यक्रम निदेशक

विजुअल आर्ट्स एवं मीडिया सेन्टर

23. प्रो० आर० नन्दकुमार	प्रोफेसर

सूत्रधार विभाग

24. श्री प्रवीण श्रीवास्तव	संयुक्त निदेशक (प्रशासन)
25. श्री जय सिंह मीणा	निदेशक (प्रशासन)
26. श्री जॉय कुरियाकोस	अवर सचिव (प्रशासन)
27. श्री टी० भट्टाचार्या	अवर सचिव
28. श्री डी०एस गौड़	अवर सचिव
29. श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)
30. श्री टी० एलोशियस	सलाहकार (सेवा एवं आपूर्त्ति विभाग)

सूत्रधार- लेखाविभाग

31. श्री पी०आर० नायर	मुख्य लेखा अधिकारी
32. श्री जयन्त चटर्जी	लेखाधिकारी
33. श्री किशोर कुमार	लेखाधिकारी
34. श्री बी०एस० बिष्ट	लेखाधिकारी

क्षेत्रीय केन्द्र

35. प्रो० के०डी०त्रिपाठी	अवैतनिक निदेशक पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
36. प्रो० ए०सी० भगवती	अध्यक्ष एवं अवैतनिक समन्वायक उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी
37. प्रो० एस० सेतार	अवैतनिक निदेशक दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलूरू